परमहंस भजनामृत

सुख शीतल करूं संसार

महामति प्राणनाथ चतुर्थ शताब्दी महोत्सव

1618 प्रणाम 2018

महामति श्री प्राणनाथ जी चतुर्थ शताब्दी
महोत्सव 2018 के पावन पर्व पर

संकलन एवं सम्पादन :

पारसमणि शास्त्री

प्रकाशक :

श्री प्राणनाथ अकादमी

धाम, पन्ना-7000416021

अनुक्रमणिका

भजन	पृष्ठ	भजन	पृष्ठ
वन्दना-वन्दौं सतगुरु	6	गुरुदेव दया करके	24
आज हमारे घर राज पधारे	6	गुरुदेव हो आप मेरे	25
अपनी वाणी में अमृत घोल	6	गुरुजी मेरी झोली भर देना	25
अमीर चले आए	7	गोविन्द गोविन्द गाए जा	26
अरे द्वारपालो कन्हैया	8	घनश्याम तेरी मुरली ने	26
आओ मेरी सखियो मुझे	9	चलिये निज दरबार अब मन	27
आए हो जो दुनियां में	10	चलो री सखी निजधाम	27
आये हैं मेहरबां	10	चन्दन है इस देश की माटी	31
इक अर्ज मेरी सुनलो	11	जब कोई नहीं आता	31
उठ जाग मुसाफिर	11	जब तेरी डोली निकाली	32
उन्हीं को होंगे तुम्हारे दर्शन	12	जगत के रंग क्या देखूं	32
एक मेहर मांगते हैं	12	जान गये, जान गये	33
एक दिन वो भोले भण्डारी	13	जागो जागो सतसंग वाले	33
ऐसी कृपा हो मन मोहन	14	जाग निज घर देख अपना	34
ओ सांवरे कन्हैया	14	जागो जागो सैयो	34
करके झूठे संग में प्यार	15	जहां कण कण में नूर भरा	35
करो प्रणाम प्रेम से प्यारो	15	जहां डाल डाल पर सोने की	35
करो मूल मिलावे का ध्यान	16	जिन्दगी इक किराये का घर	36
क्या मांगूँ श्री राज	17	जिन्दगी सुधार बन्दे	36
कैसी बांसुरी मधुर बजाई	17	जीवन को मैंने सौंप दिया	37
क्या भरोसा है जिन्दगी का	18	जीवन गुजर गया तो	37
करते हो तुम कन्हैया	18	जीवन की पगडण्डी	38
कभी प्यासे को पानी	19	ढूँढ़ रहे घनश्याम,	38
कूदे जमुना में कन्हैया	20	तालन पे ताल पे तमाल	39
कृपा की न होती जो आदत	21	तुझ में श्याम, मुझ में श्याम	39
कृष्ण प्यारे से विनती हमारी	21	तुम अब तो जागो री	40
कृष्ण प्यारे को नहीं तूने	22	तेरा अवसर बीता जाए	40
गाओ सब मिलके मंगल	22	तेरे पूजन को श्री श्याम	41
गाफिल तूं सोच मन में	23	तेरे दर पे आने को जी चाहता	41
गुरुजी मेरे मन मंदिर में	23	तेरा दो दिन जग में रहना	42
गुरुदेव तेरे चरणों से	24	तेरी याद जब से भुलाई	43

भजन	पृष्ठ	भजन	पृष्ठ
तेरे दरबार के जैसा	43	भला किसी का कर ना..	61
थाली भरके ल्याई खीचड़ो	44	मन मोहनी सी सुरतिया	62
दया कर दान भक्ति का	44	मत कर तूं अभिमान	62
दीप जले प्रेम का	45	माया में मिले	63
दुख में मत घबराना	45	मांगा है मैंने श्याम से	63
दूर नगरी बड़ी दूर नगरी	46	मिट्टी की दीवार है	64
धाम धनी आनन्द हैं	46	मुरली कौन बजाये	64
धाम से आये श्री राज	47	मिलन आज तक था	65
नन्हा सा फूल हूं मैं	48	मिलता है सच्चा सुख	65
नन्द घर आनंद भयो	48	मुझे रास आ गया है	66
ना कुछ लेकर आया जग	49	मेरी लगी श्याम संग प्रीत	66
निसवत अरस की जान के	49	मेरे बांके बिहारी लाल	67
निजवर सुन्दर श्यामा श्याम	50	मुझे मेरी मस्ती कहां	67
प्यारे प्राण पिया	51	मेरे पियाजी ने बांधी	68
प्रभु भक्ति में मन अपना	51	मेरे मन में बसे हो	68
प्रभु तेरे दर को छोड़कर	52	मेरे सतगुरु मुझको	69
प्रभु तेरे दरश बिन चैन	52	मोहे लागी लगन गुरु	69
प्रबल प्रेम के पाले पड़कर	53	मेरे पिया जी की बड़ी	70
पायो जी मैंने श्याम	53	मेरे सांवरे सलोने कन्हैया	71
परमधाम मे श्री राज श्यामा	54	मैं तो आन पड़ा दर तेरे	71
पायो निजनाम वासना	54	ओमकार त्रिविध ज्ञान का	72
परमधाम की सिफ्त	55	मैं वर मांगूँ श्री धाम धनीजी	73
पंजे वाले साहिब	56	मोहन हमारे मधुवन में	73
प्रात उठ श्रीराज श्यामा	56	मोहे सांवरा सलौना पसंद	74
पिया का दरबार	57	राज रस मीठा मीठा रे	74
पिया दूर से आई तेरे द्वार	57	राजश्यामा राजश्यामा	75
बहुत याद करते हैं तुम्हें	58	राधे रानी के नथ पर मोर	75
बरसे हैं आनन्द आज	58	राधे तेरे चरणों की	76
ब्रज के नन्दलाला राधाजी	59	राज गोपाल श्याम गोपाल	76
बृज में है छाई बहार	59	रे मन ये दो दिन का मेला	77
ब्रजपति मोहन हे घनश्याम	60	वृन्दावन विपिन श्याम	78
भूली है धाम की जमात	60	वन्दना मैं कर रही श्री	78
भजन श्याम सुन्दर का	61	श्याम तेरी वंशी बजे	79

भजन	पृष्ठ	भजन	पृष्ठ
श्याम को जाना नहीं	79	बिना कुंजी खुले	101
श्रीकृष्ण जिनका नाम है	80	सदा आनंद मंगल	101
सच्चे साथी पार के जगाने	80	सुअना बोलत है निजनाम	101
श्याम नाम के हीरे मोती	81	जीवन गर्व न कीजिए	102
श्रीकृष्ण रूप पूर्ण स्वरूप	81	नाम सुमिर जग बावरे	102
श्यामा श्याम हो	82	निजनाम सुमर जग	103
श्रीराज चरण चित्त लाना	82	सखी चल देखिए निजधाम	103
श्री राज चरणों के पास	82	सखी तुम भूल गई निजनाम	104
श्री प्राणनाथ भज रे	83	अब मन बस रहो धाम	104
श्री राजश्यामा श्याम को	83	के. विंद्रवन पधारो रे	105
श्री राजश्यामा	84	चलो चलिए आज	105
श्याम पिया मोरी रंग दे	84	मारे आनंद उछ्व	106
श्यामा-श्याम रटते-रटते	85	तुम देखो सखी	106
सत संगत में प्रेमी जनों को	85	श्री नन्द कुमार	107
श्रीकृष्ण सच्चिदा पारब्रह्म	86	सखी एक समय	108
श्री प्राणनाथ कृपाल भजुं	87	परषोत्तम प्रगट्या	109
श्री कृष्णार्पणमस्तु	88	गागर उतारो री	109
स्वस वेद ब्रह्म वाणी है	91	ठाढ़ी रहे न अहीर	110
सन्तन के संग लाग रे	91	चलो सखी कर	111
सबसे ऊँची प्रेम सगाई	92	सत्य धर्म के	111
सतगुरु की वाणी पढ़ने से	92	सुन जाग सखी	112
सतगुरु ब्रह्मानन्द हैं	93	पुण्य पावन धनी	112
सारे जहां के मालिक	94	परना जी में राज	113
सुमिरो प्रथम उन्हीं सतगुरु	94	परना की रज लगे	113
स्वागतम् कृष्ण	95	तेरो अवसर	113
हम तो रूहें फरामोश हैं	95	अब रट धामधनी	114
हर स्वांस पिया गुण गाती	96	मन तुम चलियो	114
हे प्रभु मुझे बता दो	97	जपो रे मन	115
हम सब कृष्ण के बालक	97	ओ परमधाम के	115
हे धनी श्री प्राण प्रीतम	98	स्वामी तेरा नाम	116
हो गुरुदेव दया के सागर	98	जीवन में अमृत रस	116
सोई रसना निजनाम	99	प्रेमी मस्ताने मत	117
साधो भाई भेष में भेद	99	मेरा पंथ है/सच्ची वाणी	118
परदेशी भाई हो	100	पढ़ने से जिसका/दर्शन दो	119
अब निजनाम भजो रे	100	जिने भी राज/	120

वन्दना

वन्दौं सतगुरु चरन को, करूँ सो प्रेम प्रणाम ।
अशुभ हरन मंगल करन, श्री देवचन्द्र जी नाम ।
श्री प्राणनाथ निज मूल पति, श्री मेहराज सुनाम ।
तेज कुँवरि श्याम युगल को पल पल करूँ प्रणाम ।।

आज हमारे घर

आज हमारे घर राज पधारे, आनन्द अंग अपार रे ।
धन्य धन्य भाग्य हमार रे ।।
साज श्रृंगार आरती उतारूं, जियावर प्राण आधार रे ।
तन मन धन सब करूं निछावर, आनन्द मंगल चार रे ।।
चितवन चर्चा धाम सुनाकर, जन्म मरण दुख टार रे ।
सुख शेज्या पर आये जियावर, बोलूं मैं जय जय कार रे ।।
'चन्द्र सखी' भज बाल कृष्ण छवि, जीवन सफल बनाये रे ।।

अपनी वाणी में अमृत घोल

अपनी वाणी में अमृत घोल
ओ रसना राधे राधे बोले ।
ये बोल बड़े अनमोल, ओ रसना राधे-2
राधा जी बरसाने वाली, राधाजी वृषभान दुलारी ।
दो अक्षर आधार जगत में, ये अक्षर अनमोल ।। ओ रसना..
राधा जी महारास रचावे, राधाजी नन्दलाल नचावे ।
इस छवि को भरके नयन में, अन्तर के पट खोल ।। ओ रसना..
बिन राधा नहीं सजे बिहारी, बिन राधा नहीं मिले बनवारी ।
इनके चरण पकड़ ले नादां, भटक न दर दर डोला ।। ओ...

अमीर चले आए

तर्ज :- मार दिया जाए या छोड़ दिया जाए ...

अमीर चले आए, गरीब चले आए,
आज तेरे दर पे, फकीर चले आए,
मैंने जोगी का वेष बनाया, तेरे दर पे अलख जगाया,
पर्दा तो हटा, मुखड़ा तो दिखा, सतगुरु प्यारे ....
मैंने देखी है दुनिया टाटोल के,
हूँ मैं किस की, दिखा दो दिल खोल के,
मेरा तूं ही रखवाला, मेरा तूं ही पालनहारा,
सतगुरु सबके अन्दर की है जाने, कोई आंख वाला पहचाने,
ये तो हैं दयावान,बड़ी ऊँची है शान,
सब जाओगे मान, सतगुरु..
द्वारे इनके जो शीष झुकाता, मुंह मांगी मुरादें वो पाता,
जो भी आए सवाली कभी जाए न खाली,
झोली भर जाये सतगुरु प्यारे ....
संगत द्वारे पे तेरे खड़ी है,
दर्शन की ये प्यास बढ़ी है,
सुनले अर्ज मेरी, आगे मर्जी तेरी, सतगुरु प्यारे ...
तूने सबकी है बिगड़ी बनाई,
मेरी बार क्यों देर लगाई,
तुझे दाता कहूं या विधाता कहूं, सतगुरु प्यारे ...

अरे द्वारपालो

तर्ज : ये माना मेरी जाँ ....

अरे द्वारपालो कन्हैया से कहदो,
कि दर पे सुदामा गरीब आ गया है ।
भटकते-भटकते न जाने कहां से,
तुम्हारे महल के करीब आ गया है ।
न सर पे है पगड़ी, न तन पे है जामा ।
बता दो कन्हैया को, नाम है सुदामा ।
एक बार मोहन से जाकर के कह दो,
के मिलने सखा बदनसीब आ गया है ।
सुनते ही दौड़े, चले आए मोहन ।
लगाया गले से, सुदामा को मोहन ।
हुआ रुकमिणी को बहुत ही अचम्भा ।
ये मेहमान कैसा अजीब आ गया है ।
बराबर में अपने, सुदामा बिठाए ।
चरण आंसुओं से, श्याम ने धुलाए ।
न घबराओ प्यारे, जरा तुम सुदामा,
खुशी का समा तेरे करीब आ गया है ।

आओ मेरी सखियो

आओ मेरी सखियो मुझे मेंहदी लगा दो ।
मेंहदी लगा दो मुझे ऐसी सजा दो ।
मुझे श्याम सुन्दर की दुल्हन बना दो ।
सत्संग में मेरी बात चलाई ।
सतगुरु ने मेरी कीन्हीं रे सगाई ।
उनको बुलाके हथलेवा तो करा दो .....
ऐसी पहनूं चूड़ी जो कबहू न टूटे ।
ऐसा वरूं दूल्हा जो कबहू न छूटे ।
अटल सुहाग की बिंदिया लगा दो ......
ऐसी ओढूं चुनरी जो रंग नाही छूटे ।
प्रीत का धागा कबहू ना टूटे ।
आज मेरी मोतियों से मांग भरा दो ....
भक्ति का सुरमा मैं, आंख में लगाऊंगी ।
दुनिया से नाता तोड़, उन्हीं की हो जाऊंगी ।
सद्गुरु को बुला के, फेरे तो करवा दो ......
बांध के घुंघरू मैं, उनको रिझाऊंगी ।
ले के इकतारा मैं, श्यामा श्याम गाऊंगी ।
सद्गुरु को बुला के, डोली तो सजा दो ।
सखियों को बुलाके विदा तो करा दो ......

आए हो जो दुनियां में

आए हो जो दुनियां में, प्रभु गुण गा लो,
काम धन ना आए वहां, नाम धन कमा लो ।। टेक ।।
रत्ना बने वाल्मीकि, जप के नाम उलटा,
पिंगला भी तर गई, गणिका भी कुलटा,
तोता को पढ़ाया, अब मन को पढ़ा लो .....
गज गया था नीर पीने, ग्राह आकर पकड़ा,
होता रहा दोनों में, घोर युद्ध तगड़ा,
जैसे गज बुलाये, वैसे तुम भी बुला लो .....

आए हैं मेहरबां हमारे

तर्ज :- इस तरह तोड़ा मेरा दिल ....

आये हैं मेहरबां हमारे, लेके मेहरों के भण्डार,
इक-इक रूह पर बरस रहा है,
प्यार उनका बेसुमार ।। टेक ।।
वादा किया था धनी ने, हमको बुलाने के लिए,
सत्गुरु बन कर आऊंगा, तुमको जगाने के लिए,
क्योंकि तुम हो अंगना मेरी, तुमको है मुझसे ही प्यार ...
तुम हो मेरे सच्चे प्रीतम, दिल से मुझको भुलाना ना,
बहुत रो चुकी हूं अब तो, और मुझको रुलाना ना,
क्योंकि तुम हो प्रीतम मेरे, तुम हो प्राणों के आधार ....

इक अर्ज मेरी सुन लो

इक अर्ज मेरी सुनलो, दिलदार हे कन्हैया,
कर दो अधम की नैया, भव पार हे कन्हैया ।। टेक ।।
अच्छा हूं या बुरा हूं, पर दास हूं तुम्हारा,
जीवन का मेरा तुम पर, है भार हे कन्हैया ......
तुम हो अधम जनों के, उद्धार करने वाले,
मैं हूं अधम जनों का, सरदार हे कन्हैया ....
करुणा निधान ! करुणा, करनी पड़ेगी तुमको,
वरना ये नाम होगा, बेकार हे कन्हैया ....
ख्वाहिश है ये मुझसे, दृग बिन्दु रत्न लेकर,
बदले में दे दो अपना, तुम प्यार हे कन्हैया .....

उठ जाग मुसाफिर

उठ जाग मुसाफिर भोंर भई, अब रैन कहां जो सोवत है ।
जो सोवत है सो खोवत है, जो जागत है सो पावत है ।। टेक
टुक नींद से अंखिया खोल जरा, और अपने प्रभु से ध्यान लगा ।
यह प्रीत करन की रीत नहीं, प्रभु जागत है तू सोवत है ।। 1 ।।
जो कल करना सो आज कर ले, जो आज करना सो अब कर ले ।
जब चिड़ियन ने चुग खेत लिया, फिर पछताए क्या होवत है ।। 2
नादान भुगत करनी अपनी, ए पापी पाप में चैन कहां ।
जब पाप की गठरी शीश धरी,
फिर शीश पकड़ क्यों रोवत है ।। 3

उन्हीं को होंगे

उन्हीं को होंगे तुम्हारे दर्शन,
जो तेरे चरणों में आ चुके हैं ।
सफल हुए हैं उन्हीं के जीवन,
जो तेरे चरणों में आ चुके हैं ।।
न पाया तुझको अमीर बनके,
न पाया तुझको फकीर बनके ।
उन्हीं की पूजा हुई है पूरण,
जो तेरे चरणों में आ चुके हैं ।। 1 ।।
जहाँ भी जिसने तुम्हें पुकारा ।
दिया है तूने उसे सहारा ।
कटे हैं उनके दुःखों के बन्धन,
जो तेरे चरणों में आ चुके हैं ।। 2 ।।

एक मेहेर मांगते हैं

एक मेहर मांगते हैं, हम आपसे बारम्बार ।
थोड़ी सी गर कृपा कर दो, हो जाए बेड़ा पार ।। टेक ।।
मेहर सागर में गोते लगाए, आप पढ़ें औरों को पढ़ायें ।
मेहर-मेहर रटते ही बीते, जीवन के दिन चार ।। 1 ।।
और कोई हम चीज न मांगे, मांगे तो बस मेहर की मांगे ।
आपसे मिलने की अभिलाषा, आपके दर्शन की है आशा ।
आपकी मेहर कैसे पाएं, करते रहे विचार ।। 2 ।।

एक दिन वो भोले भण्डारी

एक दिन वो भोले भण्डारी, बन करके बृजनारी,
गोकुल में आ गये हैं ।
पार्वती भी मना के हारी,
न माने त्रिपुरारी, गोकुल में.।। टेक
पार्वती से बोले मैं भी, चलूंगा तेरे साथ में ।
राधा संग श्याम नाचे, मैं भी नाचूंगा तेरे साथ में ।
रास रचा है ब्रज में भारी, मुझे दिखा दो प्यारी......
ओ मेरे भोले स्वामी, कैसे ले जाऊं अपने साथ में ।
मोहन के सिवा दूजा, पुरुष न जाए उस रास में ।
हँसी करेंगी ब्रज की नारी, मानो बात हमारी ....
ऐसा बना दो मुझको कोई, न जाने इस राज को ।
मैं हूं सहेली तेरी ऐसा, बताना बृजराज को ।
बना के जुड़ा पहन के साड़ी, चाल चले मतवारी ...
हँस के सती ने कहा बलिहारी, जाऊं इस रूप में ।
एक दिन तुम्हारे लिए, आए मुरारी इन रूप में ।
मोहिनी रूप बनाया मुरारी, अबके बारी तुम्हारी ....
देखा मोहन ने समझ गए हैं सारी बात रे ।
ऐसी बजाई वंशी सुध-बुध भूले भोले नाथ रे ।
सिर से सरक गई जब साड़ी, मुस्काए गिरधारी .....

ऐसी कृपा हो मनमोहन

ऐसी कृपा हो मनमोहन,
तेरे चरणों में मेरी लागे लगन ।। टेक ।।
तेरी कृपा से बिगड़ी बने, तेरी कृपा से रोते हँसे,
छम-छम बरस हैं नयन ।। 1 ।।
तेरी दया का भिखारी हूँ, करो कृपा दुखियारी हूँ,
तेरी कृपा बिना प्यासा है मन ।। 2 ।।
तेरी कृपा जब हो जाती है, सूखी खेती हरियाली है,
खिल जाये हर इक गुलशन ।। 3 ।।
दर्शन तेरे मिल जाये, भवसागर से तर जाये,
करो प्रभु जी कुछ ऐसा यतन ।। 4 ।।

ओ सांवरे कन्हैया

ओ सांवरे कन्हैया मुरली जरा बजाना
नाचेंगे तेरे आगे गाओ कोई तराना
मैं तेरा तेरे बस में, तू मेरा मेरे बस में
ये आरजू है दिल की, तुम हो निगाहें चश्में ।
मुरली बना के मुझको, होठों से तुम लगाना ।। 1 ।।
ओ रास के रचैया, ओ वंशी के बजैया
आ जा पुकारूं तुमको, ओ नाग के नथैया
नाचे मयूरा वन में, मौसम बड़ा सुहाना ।। 2 ।।
छोड़ो जी बालपन को, बिरहा तुम्हें पुकारे
दिल में बसाया तुमको, आ जाओ श्याम प्यारे ।
नटखट बनो ना मोहन, छोड़ो हमें सताना ।। 3 ।।

करके झूठे संग में प्यार

करके झूठे संग में प्यार, भूली सच्चा दरबार ।
तेरी माया में आकर, दीवानी हो गयी ।। टेक ।।
सच्चा संसार जाना, घर को भुलाया ।
दुःख वाली दुनिया में, किस लिए आया ।
कोई मिलता नहीं सार, जिसने छोड़ा कर बेकार ।। 1
ब्रज में हमारे, पिया खेल खिलाया ।
गऊएं चराई, मेरा माखन भी खाया ।
सच्चा प्रेम का प्यार, भूले प्राणों का आधार ।। 2 ।।
रास मंडल में रास रचावे ।
राधा के संग मिल आनन्द मनावे ।
लीला होती है अपार, नहीं प्रेम का सुमार ।। 3 ।।
दुःख वाला खेल देखूं, यह इच्छा थी मेरी ।
न था मालूम प्रभुजी ऐसी माया तेरी ।
दीये रोये बारम्बार, लगे दुःखड़े हजार ।। 4 ।।

करो प्रणाम

करो प्रणाम प्रेम से प्यारो, परमधाम को जाना है ।। टेक
सात पाताल सात स्वर्ग ऊपर, तापर सुरत चढ़ाना है ।
निराकार साकर के आगे, क्षर अक्षर बिलगाना है ।। 1
तापर एक अखण्ड सनातन, सत चित रूप बखाना है ।
आनन्द सिन्धु महासुख शोभा, सो सुख जीव को पाना है ।।
आठ पहर और चौसठ घड़ियाँ, राज रसिक गुण गाना है ।
सतगुरु शीतल चरण कमल में, गोमन का मन भाना है ।।

करो मूल मिलावे का ध्यान

करो मूल मिलावे का ध्यान, जहाँ परआतम बैठी है ।
जहाँ बैठे श्री श्यामा श्याम-2
जहाँ पर आत्म बैठी है ।। टेक ।।
चौसठ थम्भ जहाँ चार द्वार है
थम्भों से उठत है नूर
नूर, नूर सो जंग करत है जो
शीतल करे कोट शशि सूर
ये खिलवत है नूर भरी ।। जहाँ परआत्म......
तले गिलम ऊपर चन्द्रवा
सखियों की शोभा है न्यारी
तकियों के साथ भराय के बैठी
जिनकी शोभा है प्यारी
रुहें बैठी जो बारह हजार ।। जहाँ परआत्म......
मध्य में सिंहासन राज श्यामा जी
चारों चरण सुखदाई
एक चरण है नूर की चौकी पे
दूजी बांह जाँघ धराई
इन चरणों में करो प्रणाम ।। जहाँ परआत्म......
दिल में दहशत हो न जुदागी
बैठी गले डाल बहियाँ
अंग सों अंग भराये के बैठी
जैसी दाड़िम की कलियाँ
अपनी बैठक करो अब याद ।। जहाँ परआत्म......

क्या मांगू श्री राज

क्या मांगूँ श्री राज अव मैं क्या मांगूँ ।
मेरे रोम रोम में रम जाओ, रम जाओ श्री राज ।। टेक ।।
धन न मांगूँ मान न मांगूँ, झूठे जग की शान न मांगूँ ।
देना हो तो दे दे दाता, जपने को निजनाम ।। 1 ।।
मांग के झूठा खेल पसारा, भूल गये निजधाम वो प्यारा ।
भटक रहीं तेरी दर दर अंगना, वक्शो धनी श्री धाम ।। 2
कौन कौन तेरे गुण गाए, तेरी दया का पार न पाए ।
ओ प्राणों के नाथ प्यारे, दो भक्ति निष्काम ।। 3 ।।
हे पूर्णानन्द अन्तरयामी, ओ परमधाम के स्वामी ।
जहां जहां तेरा दर्शन पाऊं, वहीं बसे सुख धाम ।। 4 ।।
केवल चरण शरण में लीजो, श्रद्धा, प्रेम और भक्ति दीजो ।
जन्म जन्म की दुखियारी का, श्री राज करो कल्याण ।। 5

कैसी बांसुरी मधुर बजाई

कैसी बांसुरी मधुर बजाई,
मैं तो दूर से दौड़ी-दौड़ी आई ।।
ओ सांवरे कृष्ण कन्हाई ।। टेक ।।
मैं सोई थी अपने भवन में, नींद मेरी उचकाई ।। 1 ।।
बांस की पोरी सात सूरों में, ऐसी धुनि सुनाई ।। 2 ।।
बृज मंडल में धूम मची है, बाज रही शहनाई ।। 3 ।।
ऋषि मुनि सब ध्यान धरत हैं, आनन्द मंगल गाई ।। 4
केवल अमृत रस बरसाओ, चरण कमल बलि जाई ।। 5

क्या भरोसा है जिन्दगी का

क्या भरोसा है जिन्दगी का,
साथ देती नहीं ये किसी का ।। टेक ।।
श्वांस रुक जाएगी चलते-2, शमा बुझ जायेगी जलते-2,
दम निकल जायेगा रोशनी का.. हार जायेंगे हम चलते-2,
हाथ रह जायेंगे मलते, साथ देगा न कोई किसी का ....
बड़ी मुश्किल से नर तन मिला है -2
चोला अनमोल तेरा सिला है-2,
काम क्यों करता है गन्दगी का ....
खत्म हो जायेगी ये कहानी, बीती विषयों में बचपन जवानी,
काम ये तो नहीं आदमी का ....
वक्त है अब भी बिगड़ी बना ले, सोयी तकदीर अपनी जगा ले,
अरमां रह जायेगा दिल में दिल का ...

करते हो तुम कन्हैया

करते हो तुम कन्हैया, मेरा नाम हो रहा है ।
मेरा आपकी दया से, सब काम हो रहा है ।। टेक ।।
पतवार के बिना ही, मेरी नाव चल रही है,
हैरान है जमाना, मंजिल भी मिल रही है ।
करता नहीं मैं कुछ भी, सब काम हो रहा है ....
तुम साथ हो जो मेरे, किस चीज की कमी है,
किसी और चीज की अब, दरकार भी नहीं है ।
तेरे साथ ही से मेरा, सब काम हो रहा है ......
मैं तो नहीं हूं काबिल, तेरा प्यार कैसे पाऊं,
टूटी हुई वाणी से, गुणगान कैसे गाऊं ।
तेरी ही प्रेरणा से, ये तमाम हो रहा है ....

कभी प्यासे को

तर्ज : तुम अगर साथ देने का ....

कभी प्यासे को पानी पिलाया नहीं,
फिर अमृत पिलाने से क्या फायदा ।
कभी गिरते हुए को उठाया नहीं,
फिर आंसू बहाने से क्या फायदा ।। टेक ।।
मैं मंदिर गया पूजा आरती की,
पूजा करते समय ये ख्याल आ गया ।
कभी माता-पिता की सेवा की ही नहीं,
फिर मंदिर में जाने से क्या फायदा ।।
मैं काशी हरिद्वार मथुरा गया,
गंगा में नहाते ख्याल आ गया ।
तन को धोया मगर मन धोया नहीं,
फिर गंगा नहाने से क्या फायदा ।।
दान लाखों किया जप तप भी किया,
दान करते समय ये ख्याल आ गया ।
कभी भूखे को भोजन खिलाया नहीं,
दान लाखों का करने से क्या फायदा ।।
मैं तो सत्संग गया और वाणी सुनी,
तब वाणी को सुनकर ख्याल आ गया ।
जीवन मानव को पाकर दया न करी,
फिर मानव कहलाने का क्या फायदा ।।

कूदे जमुना में कन्हैया

तर्ज :- कैसी बाँसुरी .....

कूदे जमुना में कन्हैया, लेके मुरली,
लेके मुरली ओ कान्हा, लेके मुरली-2 ।। टेक ।।
कूद पड़े वनवारी जल में, ग्वाल सारे रोवें,
कुछ तो ग्वाले घर को भाग, यशुदा जाय पुकारे,
जल में कूदे तेरो छैया, लेके मुरली, कूदे ....
रोवत-2 यशोदा मैया, जमुना तट पर आई,
मुझे छोड़ के कहां चले हो, छोटे कृष्ण कन्हाई,
ठाढ़ी रोवे तेरी मैया, लेके मुरली, कूदे ....
कृष्ण गये पाताल लोक जहां नागिन बैठी पाई,
सोया नाग जगा दे नागिन, बोले कृष्ण कन्हाई,
गेंद दे दे रे नागनियां, लेके मुरली, कूदे ....
इतनी सुन के नागिन ने झट, नाग को दिया जगाय,
लगी फुंकार बादल भयो कारो, चढ़े शेष पर जाय,
काले पड़ गए कृष्ण कन्हैया, लेके मुरली, कूदे ....
थोड़ा-2 करके प्रभु ने अपना वदन पसारा,
चरण पकड़ कर नागिन बाली, छोड़ो पति हमारा,
भक्त कहते हैं नाग नथैया, लेके मुरली, कूदे ....

कृपा की न होती

कृपा की न होती जो आदत तुम्हारी,
तो सूनी ही रहती अदालत तुम्हारी ।
गरीबों के दिल में जगह तुम न पाते,
तो किस दिल में होती हिफाजत तुम्हारी ।
न हम होते मुल्जिम न तुम होते हाकिम,
न घर-घर में होती इबादत तुम्हारी ।
गरीबों की दुनियां है आवाद तुमसे,
गरीबों से है बादशाहत तुम्हारी ।
तुम्हारी ही उल्फत के दृग विन्दु हैं ये,
तुम्हें सौंपते हैं अमानत तुम्हारी ।

कृष्ण प्यारे से

कृष्ण प्यारे से विनती हमारी, दर्शन दे जाना ।
मैं भूला हूँ जग में आकर, मुझ को चेतना ।।
आया था मैं किस कारण से, कारण बतलाना ।।
पन्थ आपका भूल गया हूँ, मारग दिखलाना ।
प्रेम रूप का देकर दर्शन, चरणों में ले जाना ।।

कृष्ण प्यारे को

कृष्ण प्यारे को नहीं तूने जाना रे
रहा दुनिया में हर दम दीवाना रे ।। टेक ।।
झूठ कपट व्यवहार में हुआ सवेरा शाम,
एक बार भी प्रेम से लिया न प्रभु का नाम,
इसमें करता है लाखों बहाना रे ।। 1 ।।
धन दौलत से एक दिन खाली होगा हाथ,
अन्त समय श्री कृष्ण का भजन चलेगा साथ,
भर ले भक्ति का दिल में खजाना रे ।। 2 ।।
जो करना है जल्दी कर क्यों बैठा है मौन,
पल-पल में तो प्रलय है कल की जाने कौन,
वृथा अपना न जीवन गंवाना रे ।। 3 ।।
कहीं न उसको ढूँढ़ तू कर ले ये विश्वास,
प्रेम बिन्दु को देखकर प्रभु आ जाते पास,
इससे बढ़कर तुझे क्या समझाना रे ।। 4 ।।

गाओ सब मिलके

गाओ सब मिलके मंगल बधाई ।
घड़ी शुभ श्री कृष्ण दर्शन की आई ।। टेक ।।
श्री नन्द के घर में आनन्द मचा है-2
बजी आज गोकुल में घर घर बधाई ।। 1 ।।
सभी गोप ग्वाले करें आके दर्शन-2
सभी गोपियाँ मिलके गावें बधाई ।। 2 ।।
भरी आज माता यशोदा की गोदी-2
झुलाते हैं पलना और गाई बधाई ।। 3 ।।
श्री कृष्ण जी के जन्म की खुशी में-2
सभी साथ ने आज गाई बधाई ।। 4 ।।

गाफिल तूं

गाफिल तूं सोच मन में कृष्ण नाम क्यों बिसारा,
सुनता नहीं बजे है शिर काल का नगाड़ा ।। 1 ।।
यौवन भरी है नारी दिल को लगे प्यारी ।
जब मौत की तैयारी तुझ से कहे किनारा ।। 2 ।।
धन-माल-घर खजाना संग में कोई न जाना ।
क्यों देख के लुभाना सब झूठ है पसारा ।। 3 ।।
सुन्दर है देह तेरी होए भस्म की ढेरी ।
पल की लगे न देरी मुझ से कहे किनारा ।। 4 ।।
माया के जाल माही मूर्ख रहा फ़ंसा ही ।
सदानन्द मोक्ष पाई गुरु चरणों के सहारा ।। 5 ।।

गुरुजी मेरे मन

गुरुजी मेरे मन मंदिर में रहियो ।
इस दुनिया में हम हैं अकेले, तुम ही साथ निभाइयो ।। टेक ।।
रोवत-रोवत थक गये नैना, अब तो आओ मत देर करो ना ।
भव सागर में फंसे हुए हैं, भव से पार लगाइयो ।। 1 ।।
मंगल उपदेश है अति प्यारा, तुम सेवा से पाओगे पारा ।
दीन हीन को गले लगाया, हमको भी गले लगाइयो ।। 2
तेरे लिये दुनिया ठुकराई, दर-दर भटका शरण में आया ।
चरणों का दे हमें सहारा, धाम की राह बताइयो ।। 3 ।।
अपने भक्त को भूल न जाना, मन मंदिर से दूर न जाना ।
सभी भक्तों को साथ में लेकर, श्री राज के दर्श कराइयो ।।

गुरुदेव तेरे चरणों

गुरुदेव तेरे चरणों से हम को न जुदा करना ।
जब याद तेरी आये मिलने की दया करना ।। टेक ।।
न मैं तपसी ना ज्ञानी, न मैं योगी न ध्यानी ।
तू माता-पिता मेरा, मैं हूँ बालक अज्ञानी ।
गुरुदेव मेरे दोषों की, मत ख्याल किया करना ।। 1 ।।
मझधार पड़ी नैया, नहीं खेवन हारा कोई ।
है एक सहारा तेरा, मेरा नहीं सहारा कोई ।
तूं बनके सुखानी मोहे, पार किया करना ।। 2 ।।
सत द्वार तेरा तज के, और कहां मैं जाऊं ।
फरियाद किसे अपनी, रो रो कर मैं सुनाऊं ।
आवाज मेरी सुन के, पहचान लिया करना ।। 3 ।।

गुरुदेव दया करके

तर्ज : होठों से छू लो तुम ...

गुरुदेव दया करके मुझको अपना लेना,
मैं शरण पड़ा तेरी चरणों में जगह देना ।। टेक ।।
करुणानिधि नाम तेरा, करुणा दिखलाओ तुम,
सोये हुए भाग्यों को, हे नाथ जगा दो तुम,
मेरी नाव भँवर डोले, उसे पार लगा देना ....
तुम सुख के सागर हो, निर्धन के सहारे हो,
इस मन में समाये हो, मुझे प्राणों से प्यारे हो,
नित माला जपूं तेरी, नहीं दिल से भुला देना ......
पापी हूं या कपटी हूं, जैसा भी हूं मैं तेरा हूं,
घर-बार छोड़ कर मैं, जीवन से खेला हूं,
तेरे दर का पुजारी हूं, मेरे दोष मिटा देना ....
मैं सबका सेवक हूं, तेरे चरणों का चेरा हूं,
ना नाथ भुलाना मुझे, इस जग में अकेला हूं,
तेरे दर का भिखारी हूं, मेरे कष्ट मिटा देना ....

गुरुदेव हो आप मेरे

तर्ज :- होठों से छू लो तुम ....

गुरुदेव हो आप मेरे, मुझे शरण में ले लेना,
दुखिया हूं मैं प्रभु जी, मेरे दुखड़े हर लेना ।। टेक ।।
दीनों के नाथ हो तुम, मेरी बिगड़ी बना देना,
आ शरण पड़ा तेरी, अब अर्जी सुन लेना,
आगे है मर्जी तेरी, मेरे दुखड़े हर लेना .....
तुझे छोड़ कहां जाऊं, कर दो कृपा मुझ पर,
बालक मैं तेरा हूं, आया तेरे दर पर,
सुन लो न विनती मेरी, मुझे शरण में ले लेना ...
दर-दर पर भटका हूं, और कहां-कहां भटकूं,
एक आश यही मेरी, तेरा दर्शन पा जाऊं,
मेरी आश पूर्ण कर दो, अब दर्शन दे देना ....
अभिमान न हो मन में, तुम वास करो दिल में,
नित सेवा करूं तेरी, अपने मन मंदिर में,
चरणों में पड़ा तेरे, भव पार लगा देना ....

गुरुजी मेरी झोली भर देना

गुरुजी मेरी झोली भर देना ।
श्याम नाम अनमोल खजाना, इसमें भर देना ।।
जो भी आए द्वार तुम्हारे, भर-भर झोली जाए सारे ।
भरा रहे भण्डार सदा ये कृपा कर देना ।।
नाम रूपी अनमोल खजाना, गुरु कृपा बिन दुलर्भ पाना ।
दया की हम पर करके नजर, माला माल कर देना ।।
लूटा रहे गुरुदेव खजाने, भर लेंगे जो प्रेम दिवाने ।
साथ चले प्रभु नाम खजाना, सोचकर लेना ।।
मंगलदास गुरु दाता मेरे, दास गोपाल शरण में तेरे ।
अपने चरण शरण में लेकर, कष्ट मिटा देना ।।

गोविन्द गोविन्द गाए जा

गोविन्द गोविन्द गाए जा, जन्म सफल हो जाएगा ।। टेक
बड़े भाग्य से नर तन पाया, सुर दुर्लभ सद् ग्रंथन गाया,
प्रभु भजन में लगाये जा ।। 1 ।।
काम क्रोध मद लोभ को त्यागो, प्रभु भजन में निशदिन लागो,
सुख अनुपम पावेगा ।। 2 ।।
घर के काम करो तुम सारे,मुख से कहो राधे श्याम प्यारे,
भव सिन्धु तर जाएगा ।। 3 ।।

घनश्याम तेरी मुरली

घनश्याम तेरी मुरली ने दीवाना कर दिया ।
दीवाना कर दिय हमें मस्ताना कर दिया ।। टेक ।।
घर-बार सारा छोड़ के वैराग्य ले लिया ।
क्या हमसे जुदा होने का इरादा कर लिया ।।
क्या मांगते हो मुझसे मेरे पास कुछ भी नहीं ।
एक दिल था वो ही आपके नजराना कर दिया ।।
वन-वन फिरूं मैं ढूंढ़ती गोपाल कहां गए ।
गोकुल से मथुरा जाने का इरादा कर लिया ।।
घनश्याम मेरी विनती तुझे बारम्बार है ।
नन्दलाल तेरे चरणों का सहारा ले लिया ।।

चलिये निज दरबार

चलिये निज दरबार अब मन, चलिये निज दरबार ।।
पाँच तत्व बैकुण्ठ शून्य से, गुन निर्गुन से न्यारा ।। 1 ।।
ओंकार और काल निंरजन, ज्योति निराकार के पारा ।
अव्याकृत सबलिक केवल, अक्षरहूँ से न्यारा ।। 2 ।।
परमधाम दश खण्ड विराजे, शोभा रतन पहाड़ा ।
सातों घाट जमुनाजी दोऊ पुल, आगे नूर दुआरा ।। 3 ।।
चांदी चौक में चबूतरा चारों, हरे लाल वृक्ष भराया ।
सौ सीढ़ी चढ़के ऊपर जाइयो, अठाइस थंम अपारा ।। 4 ।।
चारों हार हवेली होय के, चौसठ थंभ निहारा ।
तले गिलम ऊपर चंद्रवा, शोभा चारों द्वारा ।। 5 ।।
ता मध्ये रतन जड़ित सिंहासन, तापर श्री जुगल विहारा ।
चारों खांच में लाल जो तकिये, बैठक बारे हजारा ।। 6 ।।
झलहल ज्योति करे रे सिंहासन, शोभा बहुत अपारा ।
अम्बर सखी सेवा में हाजिर, पायो नित्य विहारा ।। 7 ।।
अर्पण करूँ सब साथ को, अति हेत कर प्रीति ।
निजधाम के प्रेम में, बाढ़े सनेह की रीति ।।

चलो री सखी निजधाम

चलो री सखी निजधाम, मूल घर है जहां ।
जहां पूर्ण ब्रह्म अखण्ड, सकल सुख है तहां ।। 1 ।।
सतगुरु श्री प्राणनाथ जी, जो राह बताइया ।
सो मैं तुमको देऊँ बताय, जो मोहि दिखाइया ।। 2 ।।
इत नीचे सप्त पाताल, नारायण ओक है ।
इत ऊँचे सप्त आकाश, त्रिगुण को लोक है ।। 3 ।।

इत विष्णु चतुर्भुज रूप, मुक्ति संग चार हैं ।
इन घर को बैकुण्ठ नाम, इण्ड में सार है ।। 4 ।।
इन ऊपर अष्टावर्ण, तेजमय शून्य है ।
भुवते अष्टावर्ण लों, दश दश गुण्य हैं ।। 5 ।।
ये अष्टावर्ण सलील, मिने कै ख्याल हैं ।
इत कोटिन भांति प्रकाश, सुखन के जाल हैं ।। 6 ।।
इन आगे जीव सरूप, जोति ओंकार है ।
एक योजन अरब प्रमाण, नाम अहांकार है ।। 7 ।।
यह घट घट वासी, राम रूप की राशि है ।
यह अक्षर को चित्तरूप, मिनें व्रज भास है ।। 8 ।।
इन आगे शक्ति ज्ञान, नाम गायत्र है ।
यामें लीला सर्व अपार, वेद की मात्र है ।। 9 ।।
इन आगे तत्त्व महान, नींद को रूप है ।
यह माया छल की फांस, शून्यतम कूप है ।। 10 ।।
यामें जाहिर कोटन चन्द्र, भानु परकाश है ।
याके अन्दर हृदयाकाश, रहस का भास है ।। 11 ।।
इन आगे माया रूप इच्छा अव्यक्ति है ।
यह कोट प्रपंचन मूल महाबल शक्ति है ।। 12 ।।
इन कोट रूप धर आप कीन्ह छल बल घनी ।
दिये कोट ब्रह्मांड भुलाये, और उनके धनी ।। 13 ।।
यह आप ही सब गुण होय, आप निर्गुन बनी ।
यह आपु कृष्ण बपु धार, करत लीला घनी ।। 14 ।।
इन आगे है महाविष्णु, सूरत सबलिक कही ।
माहें तिनके महाकारन, तीन लीला सही ।। 15 ।।

गिर्द गोकल है गोलोक, परे वन वृन्द है ।
तिन वृन्दावन के मांहि, महल सुख कन्द है ।। 16 ।।
जाय सगुनी सब बैकुण्ठ, निर्गुनी शून्य में ।
जो पहुँचे दोके पार, सो वृन्दावन में ।। 17 ।।
इत हरिदास हरिवंश व्यास और रसिक जे ।
जिन्हें सतगुरु मिलिया प्रेम, मोहोल पहुँचे सोते ।। 18 ।।
इन महाविष्णु के गिरद, इण्ड सम शून्य है ।
ताको वार न पार सुमार, ब्रह्म इन गुण्य है ।। 19 ।।
इन ऊपर प्रणव ब्रह्म, सवन को पीव है ।
अक्षर के कोटि ब्रह्माण्ड, ये तिनको जीव है ।। 20 ।।
इतहिं सब सृष्टि ब्रह्माण्ड, मुक्ति को ठौर है ।
इन आगे शक्ति ज्ञान, सो विधि कछु और है ।। 21 ।।
इन आगे शक्ति कराल, सभी दुःख दान की ।
इन नाम निरंजन राय, भक्षिणी प्राण की ।। 22 ।।
तिन आगे सात शून्य हैं, सात तिन रंग है ।
माहें कोटि राग नव जाति के, उठत तरंग है ।। 23 ।।
इत छिन छिन अमृत ते मीठा, जोत नवजात है ।
ब्रह्मज्ञानी इत आय, होत गलतान है ।। 24 ।।
इन आगे महाकारन, प्रकृति को शरीर है ।
तामें लीला चार सुहाय, पुरुष कबीर है ।। 25 ।।
इन लीला बाल स्वभाव, संग सखी हंस है ।
इन आगे व्रज गोलोक कृष्ण सखी कंस है ।। 26 ।।
इन आगे रहस अखण्ड, परे निज महल है ।
सोतो पंचदेव अरू कृष्ण, प्रियन को संग है ।। 27 ।।

तिन आगे चिद आनन्द, लहर गोलोक है ।
तिन ऊपर कारण मांहि, नित्य गोलोक है ।। 28 ।।
तिन आगे महा कारन में, रहस अनूप है ।
तिन आगे चिद में तृतीय, कृष्ण को रूप है ।। 29 ।।
तिन आगे सबलिक ब्रह्म, और केवल ब्रह्म है ।
सो अक्षर अक्षरातीत को, सब प्रतिबिम्ब है ।। 30 ।।
इन दुलहिन माया जोग के, अन्तर रहस है ।
तिन रहस को बिन सतगुरु, नकल प्रकाश है ।। 31 ।।
तिन आगे दोय शरीर, प्रथम की जुक्ति है ।
चौथे वपु में अक्षर ब्रह्म, श्रुतिन की मुक्ति है ।। 32 ।।
तिन आगे सत चित मांहि, सखिन की अकस है ।
जो लीला अक्षर मांहि, तीसरी नकस है ।। 33 ।।
तिन आगे अक्षर ब्रह्म, मूल बरनन है ।
याकी सब जेता मैं कहा, किरन की किरन है ।। 34 ।।
तिन आगे अक्षरातीत, अक्षर अनध्वंस है ।
ताकी एक कला को अक्षर, अंश को अंश है ।। 35 ।।
यह पूरन ब्रह्म अखण्ड, लीला नहीं पार है ।
यह सब विधि अपरंपार, न कछुये सुमार है ।। 36 ।।
यह भवजल अपरंपार, तुच्छ कर देत है ।
जिहि बल दुध अपनो देय, महल में लेत है ।। 37 ।।
इन चरन कमल से प्रेम, जो सत्य लगावही ।
सोई कोट कल्प को पंथ, पलक में जावही ।। 38 ।।
जिन दुलहिन कारण पीउ, बुलावन आइया ।
सखी जुगल को पल के मांहि, महल पहुँचाइया ।। 39 ।।

चन्दन है इस देश की

चन्दन है इस देश की माटी तपोभूमि हर ग्राम है
हर बाला देवी की प्रतिमा, बच्चा बच्चा राम है ।। टेक
हर शरीर मंदिर सा पावन, हर मानव उपकारी है ।
जहां सिंह बन गये खिलौने, गाय जहां मां प्यारी है ।
जहां सवेरा शंख बजाता, लोरी गाती शाम है ।। 1 ।।
जहां कर्म से भाग्य बदलता, श्रमनिष्ठा कल्याणी है ।
त्याग और तप की गाथायें, गाती कवि की वाणी है ।
ज्ञान जहां का गंगाजल सा, निर्मल है अभिराम है ।। 2
जिसके सैनिक समर भूमि में, गाया करते गीता हैं ।
जहां खेत में हल के नीचे, खेला करती सीता हैं ।
जीवन का आदर्श जहां पर, परमेश्वर का धाम है ।। 3

जब कोई नहीं आता

जब कोई नहीं आता, मेरा श्याम आता है ।
मेरे दुःख के दिनों में वो बड़ा काम आता है ।। टेक ।।
मेरी नैया चलती है, पतवार नहीं दिखती ।
किसी और की अब मुझको, दरकार नहीं होती ।
दरकार पड़े जब भी, वो दौड़ा आता है ....
कोई याद करे उसको, दुःख हल्का हो जाये ।
कोई प्यार करे इससे, ये उसका बन जाये ।
ये बिन बोले दुःख को, पहचान जाता हे ....
ये इतना बड़ा होकर, दुःखियों से प्यार करे ।
चाहे छोटे हो या बड़ो, सबको स्वीकार करे ।
हम भक्तों का कहना, वो मान जाता है ....

जब तेरी डोली

जब तेरी डोली निकाली जाएगी,
बिन मुहूर्त के उठा ले जाएगी ।। टेक ।।
उन हकीमों से कहो यूं बोलकर,
करते थे दावा किताबें खोलकर
ये दवा हरगिज न खा ली जाएगी ।। 1 ।।
जर सिकन्दर का पड़ा रह गया
मरते दम लुकमान भी ये कह गया ।
ये घड़ी हरगिज न टाली जाएगी ।। 2 ।।

जगत के रंग

जगत के रंग क्या देखूं, तेरा दीदार काफी है ।
करूं मैं प्यार किस-किस से तेरा एक प्यार काफी है ।।
नहीं चाहिए यह दुनियां के निराले रंग-ढंग हैं मुझको,
चला जाऊंगा सत्संग में तेरा दरबार काफी है ।। 1 ।।
मेरे यह रिश्तेदारों ने बिछाया जाल ममता का,
तेरे भक्तों से प्रीति हो, यही परिवार काफी है ।। 2 ।।
बाहर की फीकी रोशनी से, ये आंखें भर गई मेरी,
मेरी आंखों में दो हरदम तेरा चमकार काफी है ।। 3 ।।
जगत के साज-बाजों ने, किये यह कान हैं बहरे,
कहां मैं जा सुनूं तारतम तेरा, झनकार काफी है ।। 4 ।।

जान गये हम तो जान गये

जान गये, जान गये, हम तो जान गये
नदियां के धार को, अपने तारणहार को
जान गये हम पहचान गये ।। 1 ।।
भटक रहे थे यूं ही, अंधियारे सघन वन में
गुरु की नजर जो पड़ी, छाया उजाला मन में ।
मान गए हम तो मान गये ।। 2 ।।
जन्म जन्म के फन्द में, अपने निजधाम भूल गये
गुरु की कृपा जो मिली, बन्धन सारे खुल गये ।
ठान गये, हम तो ठान गये ।। 3 ।।

जागो जागो सतसंग

जागो जागो सतसंग वाले, सोने का यह समय नहीं
सोने का यह समय नहीं, खोने का यह समय नहीं ।। टेक ।।
जीवन ये सिरदार है, मिले ना बारम्बार है ।
इसमें जीतकर हार है, सोने का यह समय नहीं ।। 1 ।।
जो चाहे कल्याण को, भज लो श्यामा श्याम को ।
धनी चरणों में ध्यान हो, सोने का यह समय नहीं ।। 2
हीरा जन्म मिला है प्राणी, इसकी कदर नहीं जानी ।
साथ न कर अब नादानी, खोने का यह समय नहीं ।। 3

जाग निज घर

जाग निज घर देख अपना, सोओ मत भयो भोर रे ॥ टेक
सद्गुरु आये जागृत निधि लाये, तारतम कियो सोर रे ।
लोक चौदे करके रोशन, सात शून्य को फोड़ रे ॥ 1 ॥
छोड़ अक्षर देख आगे, श्रीराज में चित को जोड़ रे ।
सतचिद् ब्रह्म को याद करके,
मन की दुविधा तोड़ रे ॥ 2
बहुत सोये जन्म खोये, उमर रह गई थोड़ रे ।

जागो जागो सैयो

जागो जागो सैयो जगाने वाला आ गया,
जगाने वाला आ गया–2
धाम का दुलारा मेरा सद्गुरु बनकर आ गया,
सद्गुरु बनकर आ गया,
श्री प्राणनाथ बनकर आ गया ॥ जागो–
अखण्ड खजाना सद्गुरु लाए,
अपने साथ को रहे लुटाए,
लूटो लूटो सैंयो, लुटाने वाला आ गया । जागो–2.......
अमृत सागर सद्गुरु लाए,
अपने साथ को रहे पिलाए
पी लो पी लो सैंयों,
पिलाने वाला आ गया । जागो 2 .....

जहाँ कण कण में

जहां कण कण में नूर भरा और शोभा अपरम्पार,
वो परमधाम है हमारा ॥ वो.....
कहीं फूल बाग कहीं नूर बाग, कहीं कुंज निकुंज सुहाना,
है पाट घाट और सात घाट फिर चांदनी चौक सुहाना,
शोभा इनकी मुख से न हो, लगता है कितना प्यारा ॥ वो..
आती हैं बहारें इच्छा से, और वृक्ष भी सजदा बजाएँ,
पशु पक्षी यहां के मिल जुल कर, नित गीत पिया के गाएं
दिन रात पिया के दर्शन होते, बोले जय जय कार ॥ वो..
है मूल मिलावे की शोभा अति, सुन्दर अधिक निराली,
श्री राज श्यामा जी बीच विराजे, सखियां बैठी खुशहाली,
सुरता से देखो शोभा का, होता अजब नजारा ॥ वो.....

जहाँ डाल डाल पर

जहां डाल डाल पर सोने की चिड़िया करती है बसेरा
वो भारत देश है मेरा ।
जहां सत्य अहिंसा और धर्म का, पग पग लगता डेरा ॥ टेक
ये धरती वो जहां ऋषि मुनि जपते हरि नाम की माला ।
जहां हर बालक इक मोहन है और राधा हर इक बाला ।
जहां सूरज सबसे पहले आकर डाले अपना डेरा ॥ 1 ॥
जहां गंगा जमुना कृष्णा और कावेरी बहती जाये
जहां उत्तर दक्षिण पूरब पश्चिम को अमृत पिलवाये
कहीं ये फल और फूल उगाये केसर कहीं बिखेरा ॥ 2 ॥
जहां आसमान से बातें करते, मंदिर और शिवालय
किसी नगर में किसी द्वार पर कोई न ताला डाले
और प्रेम की बंशी जहां बजाते आये शाम सवेरा ॥ 3 ॥

जिन्दगी इक किराये का घर है

जिन्दगी इक किराये का घर है,
इक न इक दिन बदलना पड़ेगा,
मौत जब तुमको आवाज देगी,
घर से बाहर निकलना पड़ेगा ।। टेक ।।
ढेर मिट्टी का हर आदमी है,
इक न इक दिन तो होना यही है,
यास्मीनों में तावूत बनेगी,
या चिताओं में जलना पड़ेगा .....
शाम के बाद होगा सवेरा, देखना है अगर दिन सुनहरा,
पांव फूलों पे रखने से पहले, तुमको कांटों पे चलना पड़ेगा..
ये जवानी सुहाना है सपना,ढूँढ ले कोई महबूब अपना,
ये जवानी अगर ढल गई तो, उम्र भर हाथ मलना पड़ेगा ..

जिन्दगी सुधार बन्दे

जिन्दगी सुधार बन्दे, यही तेरा काम है,
यही तेरा काम है, बन्दे तेरा काम है ।। टेक ।।
मानव की देह पाई, प्रभु से न प्रीत लगाई,
विषयों के जाल माहीं, फंसिए नकाम है ।
अंजली का नीर जैसे, जावत शरीर तैसे,
धीर अब धरें कैसे, बीतत तमाम है ।
भाई बन्धु मीत नारी, कोई नहीं सहायकारी,
काल यम ने फांस डारी, सर पे मुकाम है ।
गुरु की शरण जाओ, प्रभु का स्वरूप ध्याओ,
ब्रह्मानन्द मुक्ति पाओ, सदा सुखधाम है ।

जीवन को मैंने

जीवन को मैंने सौंप दिया, सब भार तुम्हारे चरणों में ।
उद्धार पतन अब मेरा है, करतार तुम्हारे हाथों में ।। 1
मेरा निश्चय बस अब एक यही, एक बार तुझे पा जाऊं मैं ।
अर्पण कर दूँ दुनियां भर का, सब प्यार तुम्हारे चरणों में ।। 2 ।।
जब जब संसार का कैदी बनूं, निष्काम भाव से कर्म करूं ।
फिर अन्त समय में प्राण तजूं, श्री राज तुम्हारे चरणों में ।। 3 ।।
मैं जग में रहूँ तो ऐसे रहूँ, जैसे जल में कमल का फूल रहे ।
मेरे अवगुण दोष समर्पित हो, श्री राज तुम्हारे चरणों में ।। 4 ।।
अगर मानव का मुझे जन्म मिले, तेरे चरणों का पुजारी बनूं ।
इस पूजक की इक इक रग का, हो तार तुम्हारे हाथों में ।। 5 ।।
मुझ में तुझ में बश फर्क यही, मैं दीपक हूँ तुम सूरज हो ।
मैं हूँ संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में ।। 6 ।।

जीवन गुजर गया तो

जीवन गुजर गया तो, जीने का ढंग आया,
जब शमा बुझ गई तो, महफिल में रंग आया ।
तन की मशीनरी ने, तब ठीक चलना सीखा,
जब पूरे तन के हर एक, पूर्जे में जंग आया ।
फुरसत के वक्त भी ना, सुमिरन का वक्त निकला,
उस वक्त, वक्त मांगा, जब वक्त तंग आया ।
गाड़ी निकल गई तो, घर से चला मुसाफिर,
मायूस हाथ मलता, वापस बैरंग आया ।
'नत्था सिंह' आयु ने जब, हथियार फैंक डाले,
यमराज फौज लेकर, करने को जंग आया ।

जीवन की पगडण्डी

तर्ज :- बचपन की मोहब्बत को ....

जीवन की पगडण्डी, कांटों से गुजरती है,
वीरों की झोली ही, फूलों से भरती है ।। टेक ।।
जिसको मरना आया, उसको जीना आया,
विष घूँट पिया जिसने, उसने अमृत पाया,
वो नहीं जिन्दी जो, सौ-सौ दफा मरती है ....
पथ पर जो कदम बढ़ा, वो रुकने न पाये,
मंजूर टूटना हो, पर झुकने न पाये,
बढ़ने वालों का ही, मंजिल स्वागत करती है ....
जिसको परवाह नहीं, काँटों तूफानों की,
कोई भी चाह नहीं, पद यश सम्मानों की,
जग के नक्शे पर वो, तस्वीर अभरती है ....
आती है जो विपदाएँ, वो 'रूप' कसौटी है,
ये क्रान्ति भरी बातें, सच्ची या खोटी हैं,
कायर पर प्रभु की भी, करुणा न उतरती है ....

ढूँढ़ रहे घनश्याम

ढूँढ़ रहे घनश्याम, ढूँढ़ फिरे घनश्याम ।।
मंदिर ढूँढ़े मस्जिद ढूँढ़े, ढूँढ़े तीरथ धाम ।
श्री वृन्दावन की कुंज गलिन में, नहीं मिले घनश्याम ।।
झूठी माया झूठी काया, झूठा सब सिनसार ।
मतलब के हैं सब संसारा, जपूं मैं तेरा नाम ।। 2 ।।
बजा दो फिर से वंशी तेरी मीठी माधुरी तान ।
तेरे दर्शन की मैं हूँ पियासी दिल को नहीं आराम ।। 3 ।।

तालन में ताल

तालन पे ताल पे तमाल माल मालन पे
वृन्दावन विपिन विहार वंशीवट पे
छित पे छान पे छाजत छतान पे
ललित लतान पे लाडली की लट पे
कहे पद्माकर अखण्ड रास मण्डल पे
मण्डित है मण्डित अल कालिन्दी के तट पे
कैसी छवि छाई आज, शरद ज्यों न्हाई आज
कैसी छवि छाइंया, कन्हैया के मुकुट पे ।।

तुझ में श्याम

तुझ में श्याम, मुझ में श्याम, सब में श्याम समाया ।
सबसे करलो प्यार जगत में, कोई नहीं है पराया ।।
एक बाप के बेटे हैं हम, एक हमारी माता ।
दाना पानी देने वाला, एक हमारा दाता ।
ना जाने किस मूर्ख ने लड़ना हमें सिखाया ।। 1 ।।
एक बाग के पुष्प है सारे, एक माला के मोती,
सूरज चांद सितारों में है एक प्रभु की ज्योति ।
ना जाने किस कारीगर ने, किस मिट्टी से बनाया ।। 2 ।।
ऊँच नीच और जात पात की, दिवारों को तोड़ो
बदले जमाना, तुम भी बदलो, बुरी आदतें छोड़ो
जागो और जगाओ सबको, समय ऐसा आया ।। 3 ।।
कण कण में प्रतिबिम्ब है, ब्रह्म तुम्हारी छाया ।
किस किस में तुम वैर करोगे कोई नहीं पराया ।।
सत्य धर्म का बोध कराने, सतगुरु ज्ञान आया ।। 4 ।।

तुम अब तो जागोरी

तर्ज- बहारो फूल बरसाओ

तुम अब तो जागोरी, अपना मेहबूब आया है
बड़ी रूह श्यामा को भेजा, बुला ल्याओ तुम रूहों को-2
इश्क का रब्द कीना है, याद उनको यह करवा दो
देकर तारतम अपना, निजघर ले के आना है रूहो-
मेहर हक की जरा देखो, जो पल पल हम पे बरसा रहे-2
बनकर आशिक रूहों के, हमें माशूक बनाया है-रूहों
वतन अपना दिखाया है, सहरग से नजीक बताया है
नींद उड़ गई रखा सपना, और सपने में अर्श दिखाया है
इतही बैठे हमने तो, परआत्म को पाया है-रूहों

तेरा अवसर बीता जाए

तेरा अवसर बीता जाए, जप ले श्री निजनाम ।
धनी श्री धाम, धनी श्री धाम ।
पिया पिया हृदय से बोलो, मन मंदिर का पर्दा खोलो ।
क्षण क्षण बीत न जाए ।। मुख से.........
यह दुनिया दो दिन का मेला, अन्त समय जाना है अकेला ।
तन-मन साथ न जाए ।। मुख से..........
मुसाफिरी जब पूरी होगी, चलने की मजबूरी होगी,
पिंजरा पड़ा रहेगा खाली ।। मुख से............
धनी ध्यान में मस्त रहे जा, भक्ति सुधारस पान किए जा ।
दर्शन पा ले स्वयं अपार ।। मुख से.........

तेरे पूजन को श्री श्याम

तेरे पूजन को श्री श्याम, बना मन मंदिर आलीशान ।। टेक
किसने जानी तेरी माया, किसने भेद तुम्हारा पाया -2
हारे ऋषि मुनि धरते ध्यान ।। 1 ।।
तूं ही जल में, तूं ही थल में, तूं ही वन में तूं ही मन में ।
तेरा रूप अनूप महान ।। 2 ।।
तूने राजा रंक बनाये, तूने भिक्षुक राज बैठाये ।
तेरी लीला अजब महान ।। 3 ।।
झूठे जग की झूठी माया, मूरख क्यूँ इसमें भरमाया -2
कर ले जीवन का कल्याण ।। 4 ।।

तेरे दर पे आने को जी चाहता है

तेरे दर पे आने को जी चाहता है ।
सर को झुकाने को जी चाहता है ।
पर तू मुझसे रूठ ना कभी ।
तेरे दर्शन पाने को जी चाहता है ।।
प्रियतम हो मेरे, मैं प्रेमी तुम्हारा ।
तेरे प्यार पाने को जी चाहता है ।।
तमन्ना है मेरी, मैं तुझ पे समाऊं ।
तेरे दिल में रहने को जी चाहता है ।।
खता हो गई क्या मुझसे कभी ।
तुझको मनाने को जी चाहता है ।।
दिलवर हो मेरे मैं आशिक तुम्हारा ।
तुझ ही पे खो जाने को जी चाहता है ।।

तेरा दो दिन जग में रहना

तेरा दो दिन जग में रहना,
तू प्रभु गुणगान कर ले ।। टेक ।।
आया है अकेला जग में, जायेगा अकेला,
दो दिन की जिन्दगी है, दो दिन का मेला,
भाई बन्धु संगे साथी, काम नहीं आयेंगे,
सोना-चांदी हीरे मोती, धरे रह जायेंगे,
मत देर कर मान ये कहना,
तू प्रभु गुणगान करले ......
गया हुआ वक्त तेरे लौट के न आयेगा,
अपने किये पर बन्दे बड़ा पछतायेगा,
तेरी-मेरी छोड़ बन्दे, हरि गुण गा ले,
अब भी समय है बार-बार कहना,
तू प्रभु गुणगान करले ......
अपना बना ले उसे बड़ा सुख पायेगा,
सुख हो या दुःख हो वही काम आयेगा,
गज ने पुकारा प्रभु दौड़े-दौड़े आये थे,
द्रोपदी ने याद किया, लाज बचाये थे,
हो यही वेद-पुराणों का कहना,
तू प्रभु गुणगान करले ......

तेरी याद जब से

तेरी याद जब से भुलाई हुई है,
मुसीबत उसी दिन से आई हुई है ....
है अज्ञान के वश तुझे दोष देते,
जो बोया था उसकी कटाई हुई है ....
करे पाप कर्मों का दिन रात सौदा,
मिले सुख ये आशा लगाई हुई है ....
प्रतिदिन मलिन आत्मा हो रही है,
बुराइयों की दुनियां, बसाई हुई है ....
जाना किधर था, तूं जाता किधर है,
ये गलती भी अपनी खाई हुई है ....
गई इतनी आयु मगर आज दिन तक,
किसी की न कोई भलाई हुई है ....
प्रभु 'देश' को ज्ञान शक्ति देना,
तेरे आगे झोली फैलाई हुई है ....

तेरे दरबार के जैसा

तेरे दरबार के जैसा, कोई दर बार नहीं,
मजहबों-मिल्लत की, यहां कोई भी दीवार नहीं ।। टेक
ये वो दर है जो, जहां चारों वर्ण आते हैं,
एक स्वामी के सदा मिलकर गीत गाते हैं-2,
प्यार ही प्यार यहां है, कोई तकरार नहीं ....
दौरे ये वो हैं, लहू सस्ता महंगा पानी है,
ऐसे में प्रभु जी, आप आए मेहरबानी है-2,
तेरी दुनिया में तेरे जैसा, कोई दीदार नहीं ....
प्राणनाथ पल में सफा करते हैं बीमारों को,
एक सजदे में बख्शते हैं, गुनहगारों को-2,
तेरी रहमत की ये वर्षा, होती हर बार नहीं ....

थाली भरके ल्याई खीचड़ो

थाली भरके ल्याई खीचड़ो, ऊपर घी की बाटकी ।
जीमो म्हारा श्याम धणी, जिमावै बेटी जाट की ।। टेक
बाबा म्हारों गाँव गयो है, न जाने कद आवेगो ।
ऊके भरोसे बैठ्यो रह्यो तो, भूखो की रह जावेगो ।
आज जिमाऊँ तने खीचड़ो, काल रावड़ी हाथ की ।। जीमो...
बार-बार मंदिर में जुड़ती, बार-बार पट खोलती ।
कैंया कोनी जीमेरे मोहन, करड़ी-करड़ी बोलती ।।
ते जीमें तो कद में जीमूं, मानूं न कोई लाट की ।। जीमो..
भक्ति हो तो करमा जैसी, सांवरियो घर आवेलो ।
भक्ति भाव सो पूरन होकर, हरषि हरषि गुण गावेलो ।
साँचो प्रेम प्रभु से हो तो, मूरत बोले काठ की ।। जीमो....

दया कर दान भक्ति का

दया कर दान भक्ति का, हमें परमात्मा देना,
दया करना हमारी आत्मा में, शुद्धता देना ।। टेक ।।
हमारे ध्यान में आओ, प्रभु आंखों में बस जाओ,
अंधेरे दिल में आकर के परम ज्योति जगा देना ।। 1 ।।
बहा दो प्रेम की गंगा, दिलों में प्रेम का सागर,
हमें आपस में मिल-जुल कर, प्रभु रहना सिखा देना ।। 2
हमारा धर्म हो सेवा, हमारा कर्म हो सेवा,
सदा ईमान हो सेवा, व सेवक चर बना देना ।। 3 ।।
धर्म के वास्ते जीना, धर्म के वास्ते मरना,
धर्म पर जां फिदा करना, प्रभु हमको सिखा देना ।। 4 ।।

दीप जले

दीप जले प्रेम का, दीप जले ज्ञान का ।
मिल जुल चलो चलें, सत चित आनन्द का देश ।।
भोर भई अब जाना है, मोह माया से जाना है,
सोचो जरा......प्रीतम का देश जाना है ।। 1 ।।
पूर्ण है चहुं ओर प्रेम भरा, सुरभि मीठी बहती है
सोचो जरा......इच्छा से ऋतु आती है ।। 2 ।।
चांद सूर्य का पहुँच नहीं, कोई जीव जड़ तो होता नहीं
सोचो जरा......आत्मा ही उजियारी है ।। 3 ।।

दुख में मत घबराना

दुःख में मत घबराना पंछी, ये जग दुःख का मेला है ।
चाहे भीड़ बहुत अम्बर पर, उड़ना तुझे अकेला है ।।
नन्हे कोमल पंख ये तेरे, और गगन की ये दूरी,
बैठ गया तो कैसे होगी, मन की अभिलाषा पूरी,
उसका नाम अमर है जग में, जिसने संकट झेला है ।। 1
चतुर शिकारी ने रखा है, जाल बिछाकर पग-पग पर,
फंस मत जाना भूल से पगले, पछताएगा जीवन भर,
लोभ के दानों में मत पड़ना, बड़े समझ का खेला है ।। 2
जब तक सूरज आसमान पर, बढ़ता चल तू चलता चल,
घिर जाएगा अंधकार जब, बड़ा कठिन होगा पल-पल,
किसे पता उड़ चलने का, आ जाता कब बेला है ।। 3 ।।

दूर नगरी

दूर नगरी बड़ी दूर नगरी ।
कैसे आऊं रे कन्हाई तेरी गोकुल नगरी ।।
रात को आऊं कान्हा डर मोहे लागे,
दिन को आऊं तो देखे सारी नगरी ।। 1 ।।
सखी संग आऊं कान्हां शर्म मोहे लागे,
अकेली आऊं तो भूल जाऊं डगरी ।। 2 ।।
धीरे से चलूं तो कान्हा, कमर मोरी लचके,
झपट चलूं तो छलक जाए गगरी ।। 3 ।।
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर,
तुम्हारे दरश बिन हो गई बावरी ।। 4 ।।

धाम धनी आनन्द हैं

धाम धनी आनन्द हैं, पावन पूरन नाम ।
पदके परे परमपद, सो कहिये परनाम ।। 1 ।।
श्री प्राणनाथ तुम सत्य हो, तुमसे चलत जहाज ।
मैं अधीन करनी नहीं, बांह गहे की लाज ।। 2 ।।
श्री प्राणनाथ निज मूलपति, श्री मेहेराज सुनाम ।
तेजकुंवरी श्यामा जुगल को, पलपल करूँ परनाम ।। 3
हद पार बेहद है; बेहद पार अक्षर ।
अक्षर पार वतन है, जागिये इन घर ।। 4 ।।
तन मन धन अर्पण कियो, सब तुम पे व्रजराज ।
मन भावे सोई करो, हाथ तुम्हारे लाज ।। 5 ।।

प्रणाम करूँ सब साथ को, धरि चरणों में शीश ।
दास जानी दया करो, बुद्धि दो बख्शीश ।। 6 ।।
भजे श्याम, भजे श्याम, श्याम श्याम भजे भजे ।
भजे कृष्ण, भजे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण भजे भजे ।।
निजानन्दस्य कृष्णस्य, प्राणनाथस्य वै धुवम् ।
चरित्रं पावनमेतद् यच्च लोकेषु दुर्लभम् ।। 1 ।।
पठनाच्छ्रवणाच्चैव प्रेम-भक्त्या समर्चनात् ।
लभते चेप्सितं लोके अन्ते च पदमव्ययम् ।। 2 ।।

धाम से आये श्री राज

तर्ज- मुम्बई से आया मेरा दोस्त

धाम से आये श्री राज, राज को प्रणाम करो ।
पन्ना में विराजे प्राणनाथ, नाथ को प्रणाम करो ।
1. गुम्मट में डेरा लगाया, मूल मिलावा बनाया
जिसने है सर को झुकाया, श्रीजी की रहमत वो पाया ।
श्रीजी के बनकर जियो, वाणी का जाम पियो...धाम से..
इस पंजे के नीचे जो आया, अखण्ड मुक्ति वो पाया
बार-बार सजदा करो, मेहरों से झोली भरो....धाम से...
2. इस देहुरी की खाक जो चूमे, वो परमधाम में घूमे
कदमों पे कदम धरो, जीते जी अब तुम मरो....धाम से...
रास पूर्णिमा की रात को, खेले रास नर नारी ।
मेला लगे बड़ा भारी, श्री जी की निकले सवारी ।
धूम मचे दिन-रात, नाथ को प्रणाम करो ।
धाम से आये श्री राज, राज को प्रणाम करो ।

नन्हा सा फूल हूँ

नन्हा सा फूल हूं मैं, चरणों की धूल हूं मैं,
आई हूं मैं तो तेरे द्वार, प्रभुजी मेरी पूजा करो स्वीकार ।।
मैं तो निर्गुणियां, बस इतनी बात है ।
मेरे जीवन की डोरी, अब तेरे हाथ है ।
थोड़ा-सा गुण मिल जाए, निर्धन को धन मिल जाए
मानों तुम्हारा उपकार ।। प्रभुजी मेरी.....
सुन लो हमारी अर्जी, मुझको कुछ ज्ञान दो
जीवन मैं जीना सीखूँ, ऐसा वरदान दो ।
सूरज सी शान पाऊं, चन्दा सा मान पाऊं
इतना सा दे दो उपहार ।। प्रभुजी मेरी.....

नन्द घर आनंद भयो

नन्द घर आनंद भयो, जब कन्हैया लाल की ।
हाथी दीन्हें घोड़ा दीन्हें और दीन्ही पालकी ।।
रत्नी दीन्हें, हार दीन्हें, गऊ ब्याही हाल की ।
कंठा दिये कठुला दिये दीन्हीं मुक्ता माल की ।। 1 ।।
कड़े दिये छड़े दिये, विन्दी दीन्ही भाल की ।
सुरमा दीन्हें, दर्पण दीन्हें, कंघी दीन्हीं बाल की ।। 2 ।।
बोलो जय, बोलो जय, जय बोलो गोपाल की ।
रोहिणी नन्दनन्दन जय दाऊ लाल की ।। 3 ।।
श्री नन्दलाल की यशोदा के बाल की ।
जय गोपी ग्वाल की ब्रज जन पालकी ।। 4 ।।

ना कुछ लेकर आया

ना कुछ लेकर आया जग में, ना कुछ लेकर जाएगा ।
श्याम सुन्दर का ध्यान लगा ले, भव सागर तर जाएगा ।
मेरा तेरा लगा रखा है, साथ तेरे क्या जाएगा ।
धन्य हुआ जीवन उसका, जो राधे-राधे गुण गाएगा ।।
सुन्दर नारी लगे पियारी, मरघट तक ही जाएगी ।
कोमल कोमल काया तेरी, मिट्टी में मिल जाएगी ।।
कोई नहीं है यहां किसी का, हंस अकेला जाएगा ।
श्वांस श्वास जिन नाम जपो, तुम यम का फंद न आएगा ।।
सतगुरु मंगल यह फरमाते, परमधाम को पाएगा ।
गोपाल रहे आनन्द मंगल में, राज रसिक गुण गाएगा ।।

निसबत अरस की जान के

निसबत अरस की जान के, मेरे प्रितम आ गये ।
इश्क और इलम की सब बात लुटाने आ गये ।।
जब-जब ये साथ आपका, माया में खो गया,
पाकर के प्यार आपका, बस आपका हो गया ।
पहचान निज स्वरुप की, करवाने आ गये ।। 1 ।।
चरणों तले बैठाया, करिश्मा मेहेर का,
निजनाम से उतारा, रंग माया के जेहेर का ।
उलझन वो साथ की, सुलझाने आ गये ।। 2 ।।
सुर सज गये प्यार के, इस दिल के साज पे,
सदके तेरे प्यार के, वारी श्री राज पर ।
मीठे वचन वो प्यार के, आतम को भा गये ।। 3 ।।

निजवर सुन्दर श्यामा श्याम

निजवर सुन्दर श्यामा श्यामा,
कृष्ण जियावर है धनीधाम ।। 1
सत चिद आनन्द अक्षर पार,
अनन्त अनादि लीलाधार ।। 2
नाम महिमा सतगुरु रूप, प्रगट
भये हैं सो निज रूप ।। 3 ।।
सब विध धाम की महिमा गाई,
श्याम श्यामा वर सत्य कहाई ।। 4
नित्य निरन्तर सुख के दाता,
ब्रह्म सृष्टि के हो तुम नाथा ।। 5 ।।
प्रियवर विनती करत है आज,
राखो अब तुम मेरी लाज ।। 6 ।।
अमृत रूप वचन तुम्हारे,
लोक चतुर्दश ते हैं न्यारे ।। 7 ।।
निराकार साकार के आगे,
जगत वचन तहां तनक न लागे ।। 8 ।।
अक्षर पार घर अक्षरातीत,
हैं यामें सब धाम चरित ।। 9 ।।
यह वचन सब लेऊ विलोय,
कृपा तुम्हारी जबहीं होये ।। 10 ।।
सार अरथ तब जिय में धार,
कमल चरण में प्रेम अपार ।। 11 ।।
यह सुख सागर महिमा भारी,
ब्रह्म सृष्टि में करूं परचारी ।। 12 ।।
यह आनन्द जब आतम लेवे,
तव तुम चरण कमल को सेवे ।। 13
होवे विकार जब तेरे दूर,
धनी सों प्रेम करें भरपूर ।। 14 ।।

प्यारे प्राण पिया

प्यारे प्राण पिया मेरा तड़पे जिया अब बुलाना
तेरे चरणों में मेरा ठिकाना ।। टेक ।।
ऐसा माया का नाटक दिखाया
सच्ची प्रीति को जिसने भुलाया-2
है वो धाम कहाँ, कैसे पहुँचूं वहाँ, मैं दिवाना ।।
तेरे चरणों में ....
ऐसी प्रेम की वंसी बजाओ, अपने प्रेमी को प्रीतम बुलाओ
देखें हम भी सही, रास लीला वही, फिर रचाना ।।
तेरे चरणों में ....
तेरे प्रेमी हैं दुख के सताये, होके आजिज तेरे द्वार पे आये
खोल पर्दा जरा, हाल दुख का भरा, है सुनाना ।।
तेरे चरणों में ....
दीन जाये कहाँ ये सुना दे, अपने मिलने का मार्ग बता दे
अब तो दुखिया है मन, रो-रो गुजरे हैं दिन, सूखे प्राणा ।।
तेरे चरणों में ....

प्रभु भक्ति में मन

प्रभु भक्ति में मन अपना, लगा लेते तो अच्छा था,
कर्म कोई नेक दुनिया में, कमा लेते तो अच्छा था ।। टेक
न भूखे को ही दी रोटी, न प्यासे को दिया पानी,
किसी दुखिया के गर हम, काम आ जाते तो अच्छा था ..
बड़े शुभ कर्म करने से, मिला ये चोला नर तन का ।
बुराइयों से अगर इसको, बचा लेते तो अच्छा था ..
कभी भी भूल कर हमने, न ढूंढ़ा सत्य मार्ग को,
कुमार्ग से अगर इसको, हटा लेते तो अच्छा था ....

प्रभु तेरे दर को

प्रभु तेरे दर को छोड़कर किस दर जाऊं मैं ।
यहां सुनता मेरी कौन है किसे सुनाऊं मैं ।।
जब से नाम भुलाया तेरा, भारी संकट आये हैं ।
ना जानूं मैं जन्म-जन्म में, कितने पाप कमाये हैं ।
सरमाऊँ प्रभु आप से, कैसे मुख दिखलाऊँ मैं ।।
काम क्रोध की गहरी नदियाँ, ये नहीं तरने देते हैं ।
ध्यान आप का धरता हूँ तो, ये आगे आ जाते हैं ।
कैसे स्वामी आपके दर्शन पाऊँ मैं ।।
तुम सबको शक्ति देते हो, तुमसे ही वर पाते हैं ।
ऋषि-मुनि और ज्ञानी-ध्यानी नाम आपका गाते हैं ।
दया करो हे कृपा निधि, होश में आऊं मैं ।।

प्रभु तेरे दरश बिन

प्रभु तेरे दरश बिन चैन, मुझे आता नहीं,
तेरे चरणों से ध्यान अब जाता नहीं,
तूं दर्शन दे दे ओ मुरली वाले ।। टेक ।।
तेरे सिवा दुनियां में कोई नहीं मेरा,
तेरे चरणों में मैंने डाला है डेरा,
कुछ नहीं मुझे तेरा प्यार चाहिए,
सर पे हमारे तेरा हाथ चाहिए,
कोई रंग नया मुझपे, चढ़ पाता नहीं है ....
श्याम तेरी वंशी दिन-रात बजे,
तेरे दर्शन से ही पाप कटे,
प्यार तुम्हारा कभी कम न हो,
तेरे भक्तों को कोई गम न हो,
दुष्कर्म कोई मुझको, छू पाता नहीं है ....

प्रबल प्रेम के पाले

प्रबल प्रेम के पाले पड़कर, प्रभु को नियम बदलते देखा ।
अपना मान भले टल जाये, भक्त का मान न टलते देखा ।।
जिनकी केवल कृपा दृष्टि से, सकल सृष्टि को पलते देखा,
उनको गोकुल के गोरस पर, सौ-सौ बार मचलते देखा ।।
जिनके चरणकमल कमला के, करतल से न निकलते देखा ।
उनको ब्रज की कुंज गलिन में, कंटक पथ पर चलते देखा ।।
जिनका ध्यान विरंची शम्भु, सनकादिक से न सम्भलते देखा ।
उनको ग्वाल सखा मण्डल में, लेकर गेंद उछलते देखा ।।
जिनकी वक्र भृकुटि के भय से, सागर सप्त उबलते देखा ।
उनके मां यशोदा के भय से, अश्रु बिन्दु दृग ढलते देखा ।।

पायो जी मैंने

पायो जी मैंने श्याम रतन धन पायो ।
वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु,
कृपा कर अपनायो ।
जनम-जनम की पूँजी पायी,
जग में सभी खोवायो ।
खरचे न खूटे चोर न लूटे,
दिन-दिन बढ़त सवायो ।
सत की नाव खेवटिया सतगुरु,
भवसागर तर आयो ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर,
हरख-हरख जस गायो ।

परमधाम में श्री राज श्यामा

प्रणाम जी, प्रणाम जी-2

परमधाम में श्री राजश्यामा, सखियां संग विचरते हैं।
प्रेम भक्ति में लीन सभी जन, सदैव उनको करते हैं
प्रणाम जी, प्रणामी जी !
यह प्रेम भक्ति का वन्दन है, परमात्म का अभिनन्दन है।
बंध जाये भक्ति श्री राज से, ऐसा सच्चा बन्धन है ।।
प्रणाम जी, प्रणाम जी !
करे श्रीराज को प्रणाम जो, बन जाए स्वयं प्रणामी वो।
जो सुन्दरसाथ हैं कहलाते, श्री प्राणनाथ के प्यारे ओ ।।
प्रणाम जी, प्रणाम जी !
श्री प्राणनाथ प्यारे का जो, भक्त अगर निसकाम हो।
श्री राजजी स्वीकार करे हर्षित हो उसके प्रणाम को।
प्रणाम जी, प्रणाम जी !
नवधा भक्ति से उत्तम है, सब साधन में सर्वोत्तम है।
करे ऐसा प्रणाम उनको जो, पूरण ब्रह्म सर्वोत्तम है।
प्रणाम जी, प्रणाम जी !!!

पायो निजनाम

पायो निजनाम वासना जागी
पायो कृष्णनाम वासना जागी ।। ध्रुपद.. ।।
व्रज में खेले, रास में खेले, नौतन पुरी विसराम ।।
श्री देवचन्द्र जी तारतम लाए, खोल दिए परमधाम ।।
श्री प्राणनाथ जी साथ जगाए, पूरण कियो मन काम ।।
जागनी रास पन्ना जी में खेले,
किसी की न रही मन हाम ।।

परमधाम की सिफत

तर्ज-तुम अगर साथ देने का वादा करो

परमधाम की सिफत को मैं क्या कहूँ
वक्त आने पर, सब भेद खुल जायेगा। जय हो-2
1. लाखों ऋषि मुनि जग में आये मगर
भेद अब तक किसी ने भी पाया नहीं
वेद कहते हैं अगम निगम जिसको
अलख, वस्तु है, किसी ने लखाया नहीं
जिसने भी तारतम को ग्रहण किया
वक्त आखिर को वो अपने घर जाएंगे
जय हो-2 परमधाम की........
2. स्वामी श्री प्राणनाथ जी आए
संग में श्री तारतम लाए
जो इन की शरण में आ ही गया,
भव सागर से इक दिन वो तर जायेगा।
जय हो-2 परमधाम की...........
3. ताल और पाल युमना किनारा जहां
जा के देखो अजब है नजारा वहां
जिसने श्री कुलजम ग्रंथ पढ़ ही लिया
परमधाम को सीढ़ी वो चढ़ जाएगा।
जय हो-2 परमधाम की........

पंजे वाले साहिब

तर्ज- हम तो चले परदेश

पंजे वाले साहिब, तेरे दर पे आ गए,
छोड़ के झूठी आस, तेरे दर पे आ गये ।
आपने ऐसा जाल बिछाया,
झूठे खेल को मन ललचाया ।
हमको तो यह खबर न थी,
क्या-धाम धनी के मन में थी ।
खेल देखन के काज, इस माया में आ गये ।
छोड़ के झूठी आस तेरे.............
धाम धनी हम अंगना तुम्हारी,
पक्ष पचीस में खेल न हारी ।
खेल नहीं अब भाता है, धाम नजर में आता है ।
ले चलो अब तो धाम हम उदासी हो गये,
छोड़ के झूठी आस तेरे दर पे आ गये ।
पंजे वाले...........

प्रात उठ श्री राज

प्रात उठ श्रीराज श्यामा जी को, पल पल करूँ परनाम ।
पूरण ब्रह्म सनातन सब पर, केल करत परम धाम ।
जुगल स्वरूप सुन्दर सुखदायक, शोभा सिफत अनाम ।
द्वादश सहस्र किरणमध राजित, झलकत साड़ी जाम ।
रतन सिंहासन आसन के मध, सुन्दर जड़ित ललाम ।
तापर चिदानन्द लख आतम, तब होवे निहकाम ।
दास गोपाल पाये निज प्रभु को, वारत तनमन धाम ।

पिया का दरबार

सबसे सुन्दर, सबसे प्यारा, है तेरा दरबार,
बना रहे यूं, हमपे पियाजी, सदा-सदा तेरा प्यार ।
तेरा दरबार न छूटे, प्यार की तार ना टूटे ।
तुमसे नेह लगाके, पाये सुख हम सारे,
तुम मिल गये पियाजी, धन्य-धन्य भाग हमारे,
कहाँ मिलेगा, ऐसा सच्चा, बिना स्वार्थ का प्यार ।। 1 ।।
तुम हो मेहर के सागर, तुम ल्याये अरज खजाना,
तुमने सिखाया जीना, सत की राहों पे चलना,
बिना तुम्हारे सपने में भी, जीना है बेकार ।। 2 ।।
तेरे श्री चरणों में, बहती प्रेम की धारा,
बैठी है सब मिलके, वो मूल मिलावा हमारा,
यहाँ झुकाकर सिर को अपने, पाये धनी तेरा प्यार ।। 3

पिया दूर से आई

पिया दूर से आई तेरे द्वार, खाली कैसे जाऊंगी ।
निज चरणों से है मेरा प्यार, खाली कैसे जाऊंगी ।।
झूठे यह बन्धन सारे झूठी है माया ।
श्वासों का आना जाना झूठी है काया ।
सच्चा धनी जी तेरा दरबार ।। 1 ।।
रंग में तेरे रंगी छोड़ा जग सारा, मैं हूं अंगना तेरी तू प्राण प्यारा ।
श्री राज हो बखशन हार ।। 2 ।।
कोई दीवानी कहे कोई बावरिया ।
नाम की तेरे ओढ़ी प्रेम चदरिया ।
मुझे दर्शन दिखा दो एक बार ।। 3 ।।
जब तेरा दर्शन पाऊं चिन्ता मिट जाये ।
चरणों में सेवक खड़ी शीश झुकाये ।
मुझे अपना बना लो सरकार ।।

बहुत याद करते हैं

तर्ज :- बहुत प्यार करते हैं ....

बहुत याद करते हैं तुम्हें श्री राज,
तेरे चरण कमलों में रहे मेरा मन ।। टेक ।।
वो मुरली की तानें फिर से सुना दो,
मेरी सोई किस्मत भगवन जगा दो,
मैं जाऊं कहां मुझको, ले लो शरण ....
ना देरी लगाओ ओ वृज के वासी,
मेरे सूने मन में है छाई उदासी,
तेरी बंसी सुनके मैं हो जाऊं मगन ....
समुद्र अथाह है, है दूर किनारा,
जो इक बार तेरा हो जाए इशारा,
मैं खो जाऊं तुझमें, न हो फिर जन्म ....
'पथिक' की ये अर्जी मन्जूर करना,
मुझे अपने चरणों से न दूर करना,
तूं ले चल कन्हैया, मुझे वृन्दावन .....

बरसे हैं आनन्द

बरसे है आनन्द आज, कन्हैया आये हैं ।
कोई नाचो गाओ आज, कन्हैया आये हैं ।।
गोकुल की हर इक गलियाँ, सब फूल पात और कलियाँ ।
सब मंद मंद मुस्काये, कन्हैया आये हैं ।। 1 ।।
सब वृन्दावन की गलियाँ, हर फूल पात और कलियाँ ।
सब मंद मंद मुस्काये, कन्हैया आये हैं ।। 2 ।।
सब मिलके बधाई गावो, नौवत सहनाई बजाओ
और मंगलाचार सुनाओ, कन्हैया आये हैं ।। 3 ।।

ब्रज के नन्दलाला

ब्रज के नन्दलाला राधा जी के सांवरिया ।
सब दुख दूर हुए जब तेरा नाम लिया ।।
मीरा पुकारे तुम्हें गिरधर-गोपाला,
बन गया अमृतमय विष का भर प्याला,
कौन मिटाये उसे जिसे तूने राख लिया ।। 1 ।।
जब तेरे गोकुल में आई विपदा भारी
एक इशारे पे सारी विपदा टारी,
उठ गया गोवर्धन जैसे तूने उठा लिया ।। 2 ।।
नैनों में श्याम बसे, मन में बनवारी,
सुध बिसरा गई मुरली की धुन प्यारी,
मेरे मन मंदिर रास रचाओ रसिया ।। 3 ।।

बृज में है छाई बहार

बृज में है छाई बहार, श्याम मेरे मन भा गया,
राधा है करती पुकार, श्याम मेरे...।। टेक ।।
1. झूम-झूम चली राधा, बृज की गलिन में-2,
आज मेरे साँवरे देखो, मधुवन में आ गये-2
राधा का सच्चा है प्यार...श्याम मेरे...
2. देख राधा साँवरे को, थोड़ा शरमा गई-2,
धीरे-धीरे चली राधा, चरणों में आ गई-2
धीरे से बोली पुकार...श्याम मेरे...
3. प्रेम लगन में राधा, मधुवन में आय गई-2,
मीठी मुरली की तान, मनको लुभा गई-2
आगे हैं बैठे मुरार....श्याम मेरे...
4. वंशी की धुन में, प्रेम लगन में-2,
राधा ने श्याम पाया, देखो मधुवन में ।
राधा का सच्चा है प्यार...श्याम मेरे...

ब्रजपति मोहन

ब्रजपति मोहन हे घनश्याम, पतित पावन राधेश्याम ।।
हे नन्दनन्दन हे ब्रजराज, पूरन चिद्घन हे श्रीराज ।।
हे मुरलीधर हे नन्दलाल, रसिक शिरोमणि हे गोपाल ।।
हे मम रक्षक हे मम नाथ, दीनबन्धु हे गोपीनाथ ।।
हे पूर्णानन्द सच्चिदानन्द,
श्री प्राणनाथ हे आनन्द कन्द ।।

भूली हैं धाम की जमात

भूली है धाम की जमात,
जगाने प्राणनाथ जी आए ।। टेक ।।
सबसे पहले श्यामा जी आए,
तीन सौ तेरह साथ जगाए ।
फिर से दिखाया ब्रज रास ।।
दीव बन्दर से परना जी तक,
प्राणनाथ जी पैदल चलकर ।
साथ जगाया बेशुमार ।।
प्राणनाथ जी का ये ही नारा,
लूला पंगला साथ जो सारा ।
इन्द्रावती न छोड़े हाथ ।।
प्राणानाथ जी को रूहें प्यारी,
रूहें धनी पर जाये बलिहारी ।
आशिक माशूक की ये बात ।।

भजन श्याम सुन्दर का

भजन श्याम सुन्दर का करते रहोगे,
तो संसार सागर से तरते रहोगे ।। टेक ।।
कृपा नाथ बेशक मिलेंगे किसी दिन
जो सत्संग पंथ से गुजरते रहोगे ।। 1 ।।
चढ़ोगे हृदय में सभी के सदा तुम
जो अभिमान गिरी से उतरते रहोगे ।। 2 ।।
न होगा कभी क्लेश मन में तुम्हारे
जो अपनी बड़ाई से डरते रहोगे ।। 3 ।।
छलक ही पड़ेगा दया सिन्धु का दिल
जो दृग बिन्दु से रोज भरते रहोगे ।। 4 ।।

भला किसी का कर न सको

भला किसी का कर न सको तो, बुरा किसी का मत करना ।
पुष्प नहीं बन सकते हो तो, कांटे बन कर मत रहना ।। टेक ।।
बन न सको भगवान अगर तुम, कम से कम इन्सान बनो ।
नहीं कभी शैतान बनो तुम, नहीं कभी हैवान बनो ।
सदाचार अपना न सको तो, पापों में पग मत धरना.....
सत्य वचन न बोल सको तो, झूठ कभी भी मत बोलो ।
मौन रहो तब ही है अच्छा, कम से कम विष मत घोलो ।
बोले से पहले तुम तोलो, फिर मुंह को खोला करना
घर न किसी का बसा सको तो, झोंपड़ियां न जला देना ।
मरहम पट्टी कर न सको तो, खारा नमक न ला देना ।
दीपक बन के जल न सको तो, अँधियारा भी मत करना
अमृत पिला सको न किसी को, जहर पिलाने से डरना ।
धीरज बँधा नहीं सकते तो, घाव किसी को मत करना ।
श्याम नाम की माला लेकर, सुबह श्याम भजन करना ।

मन मोहनी सी सुरतिया

मन मोहनी सी सुरतिया, श्री राज प्यारे जू-2
सखी देख-देख हरखतिया, श्री राज प्यारे जू-2
ये नैन सदा सुखदाई, शोभा बरनी न जाई ॥ 1 ॥
बाँकी-बाँकी चितवनिया, श्री राज प्यारे जू-2 ॥ सखी..
रसना है प्यारी-प्यारी, मैं जाऊँ वारी-वारी ॥ 2 ॥
तोरी मीठी-मीठी बतियां, श्री राज प्यारे जू-2 ॥ सखी..
मुख में तम्बोल की लाली, है अद्‌भुत और निराली ॥ 3
मन मोहनी सी पवनिया, श्री राज प्यारे जू-2 ॥ सखी...
अधरों की ललक न्यारी, मोहे भा गई छवि तिहारी ॥ 4
तोरी मन्द-मन्द मुस्कनियाँ, श्री राज प्यारे जू-2 ॥ सखी..
ये केश हैं अति घनेरे, मैं निरखूं साँझ सवेरे ॥ 5 ॥
घूँघराली सी लटकनियां, श्री राज प्यारे जू-2 ॥ सखी..
संग में है श्यामा रानी, सब सखियों में महारानी ॥ 6 ॥
इस युगल स्वरूप पे मैं जाऊँ, बलिहार प्यारे जू ॥ सखी..

मत कर तूं अभिमान

मत कर तूं अभिमान, रे वन्दे झूठी तेरी शान रे,
मत कर तूं अभिमान ॥ टेक ॥
तेरे जैसे लाखों आये, लाखों इस माटी ने खाये-2
रहा न नाम निशान ओ वन्दे, मत कर तूं अभिमान ॥ 1
झूठी माया झूठी काया, वो तेरा जो हरि गुण गाया-2
जप ले हरि का नाम ओ वन्दे, मत कर तूं अभिमान ॥ 2
माया का अंधकार निराला, बाहर उजला भीतर काला-2
इसको तूं पहचान रे वन्दे, मत कर तूं अभिमान ॥ 3 ॥
तेरे पास हैं हीरे मोती, मेरे मन मंदिर में ज्योति-2
कौन हुआ धनवान रे वन्दे, मत कर तूं अभिमान ॥ 4 ॥

माया में मिले हो पिया

माया में मिले ओ पिया, माया से दूर कर दो,
आतम के धनी हो तुम, अब मांग मेरी भर दो ॥ टेक ॥
माया छल वाली है, कृपा अपनी रखना,
कहीं पांव फिसल जाए, रहमत अपनी रखना
इक जाम पिला करके, मदहोश मुझे कर दो ....
मैं अंगना हूं तेरी, तुम धाम धनी मेरे,
मैं लहर हूं सागर की, तुम साहिल हो मेरे,
इक विनती है बलमा, अंगना पे तरस कर दो ....
चंद सांस जो बाकी हैं, बीते तेरे चरणों में,
जीना तेरे चरणों में, मरना तेरे चरणों में
मुझे और न कुछ भाए, मेरी आस पूरण कर दो.......

मांगा है मैंने श्याम से

मांगा है मैंने श्याम से, वरदान एक ही ।
तेरी कृपा बनी रहे, जब तक है जिन्दगी ॥ टेक ॥
जिस पर प्रभु का हाथ था, वो पार हो गया ।
जो भी शरण में आ गया, उद्धार हो गया ।
जिसका भरोसा श्याम पर, डूबा कभी नहीं ॥
कोई समझ सका नहीं, माया बड़ी अजीब ।
जिसने प्रभु को पा लिया, है वो ही खुशनसीब ।
उसकी इजाजत के बिना, पत्ता हिले नहीं ॥
ऐसे दयालु श्याम से, रिश्ता बनाइये ।
मिलना रहेगा आपको जो कुछ भी चाहिये ।
ऐसा करिश्मा होगा जो हुआ कभी नहीं ॥
कहते हैं लोग जिन्दगी किस्मत की बात है ।
किस्मत बनाना भी मगर उसके ही हाथ है ।
करले यकीन अब तेरा ज्यादा समय नहीं ॥

मिट्टी की दीवार है

मिट्टी की दीवार है, मिट्टी का संसार है ।
मिट्टी में मिल जाना वन्दे, इसका क्या इतवार है ।।
काला गोरा रूप देखकर, भूल फिरा दीवाना तू-2
मैं-मैं मेरी-मेरी करता, सार वस्तु नहीं जाना तू-2
मिट्टी का विकार है, मिट्टी का सब द्वार है ।।
मिट्टी में मिल...
घड़ी-घडी है आयु घटती, ज्यूं अंजली का पानी है-2
बाल अवस्था गयी जवानी, मौत शीश मडरानी है-2
इतना तू गँवार है, करता नहीं विचार है ।।
मिट्टी में ही...
तेरे देखते गये अनेकों, साथी जो कहलाते थे-2
बढ़ी प्रीत सम्बन्ध घनेरा, बड़े काम में आते थे-2
छोड़ गये घरवार है, तेरा क्या अधिकार है ।।
मिट्टी में ही...
मिट्टी का दीवार है, मिट्टी का संसार है ।
मिट्टी में ही मिल जाना वन्दे, इसका क्या इतवार है ।।

मुरली कौन बजाये

मुरली कौन बजाये द्वारे मेरे, बांसुरी कौन बजाये ।
बांकि बांकि तान कहत मुरली में, राधे के गुण गाये ।। 1
हाथ लकुटिया कांध कमरिया, नन्दजी की धेनु चराये
इत गोकुल उत मथुरा नगरी, बीच में दान चुकाए ।। 2 ।।
पैठी पाताल कालि नाग नाथ्यो, फन पर निरत कराये
छत्रसाल नागर बलिहारी, चरण कमल बलि जाये ।। 3 ।।

मिलन आज तक था

मिलन आज तक था हमारा तुम्हारा ।
रही जिन्दगी तो मिलेंगे दुबारा ।।
अरमानों के दीप जले हैं ।
दिल में खुशी के फूल खिले हैं ।
चमकेगा कब अपनी किस्मत का तारा ।। रही जिन्दगी..
किस्मत में लिखी गयी मुलाकात इतनी ।
हंसी खुशी गुजरी ये सौगात अपनी ।।
फिर कब मिलेगा ऐसा नजारा ।। रही जिन्दगी...
मुहब्बत करके दगा न देना ।
हमको हमेशा बुलाते ही रहना ।
करना न हमसे कभी भी किनारा ।। रही जिन्दगी....
किसको खबर ख्याल कब क्या होगा ।
काशी सुमन यह दर्शन होगा ।
कहता यू लहरी निवेदन हमारा ।। रही जिन्दगी....

मिलता है सच्चा

मिलता है सच्चा सुख केवल, श्री राज तुम्हारे चरणों में ।
मैं बिनती बारम्बार करूं, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।। टेक
चाहे काटों पर भी चलना हो, चाहे अग्नि में भी जलना हो ।।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो ।। 1 ।।
चाहे संकटों ने मुझे घेरा हो, चाहे चारों ओर अंघेरा हो ।
पर मन ना डगमग मेरा हो ।। 2 ।।
चाहे जीवन मुझ पर भार बने, चाहे मौत गले का हार बने ।
चाहे बैरी सब संसार बने ।। 3 ।।
जिह्वा पर तेरा नाम रहे, तेरी याद सुबह और शाम रहे ।
बस काम ये आठों याम रहे ।। 4 ।।

मुझे रास आ गया है

मुझे रास आ गया है तेरे दर पे सर झुकाना ।
तुझे मिल गई पुजारिन, मुझे मिल गया ठिकाना ।।
मुझे कौन जानता था तेरी बन्दगी से पहले,
तेरी याद ने बना दी, मेरी जिन्दगी फसाना ।। 1 ।।
मुझे इसका गम नहीं है, कि बदल गया जमाना,
मेरी जिन्दगी के मालिक, कहीं तुम बदल न जाना ।। 2
तेरी सांवरी सी सूरत, मेरे मन में बस गई है,
ए सांवरे सलोने, अब और न सताना ।। 3 ।।
मेरी आरजू यही है, दम निकले तेरे दर पे,
अभी सांस चल रही है, कहीं तुम चले न जाना ।। 4 ।।
यह सर वो सर नहीं है, जिसे रख दूं फिर उठां लूं,
जब चढ़ गया चरण में, आता नहीं उठाना ।। 5 ।।

मेरी लगी श्याम संग प्रीत

मेरी लगी हैं श्याम संग प्रीत, कि दुनियां क्या जाने ।
मुझे मिल गया मन का मीत, कि दुनिया क्या जाने ।। टेक
बाजी जब गुरुवर पे लगाई, पलट गया पासा मेरे भाई,
मेरी हार हो गई जीत, कि दुनिया क्या जाने ।
प्रीतम ने खुद प्रेम जताया, करके इशारा पास बुलाया ।
है प्रेम की उलटी रीत, कि दुनिया क्या जाने ।
ताल अलग है, राग अलग है, ये वैराग-अनुराग अलग है ।
मन गाये किसके गीत, कि दुनिया क्या जाने ।
सत्संगी होकर जो सीखा, काम-क्रोध खोकर जो सीखा ।
कैसा है ये संगीत, कि दुनियां क्या जाने ।

मेरे बांके बिहारी लाल

मेरे बांके बिहारी लाल, नजर तोहे लग जाएगी ।
मोर पंखा तेरे शीश पे सोहे, गल वैजन्ती माल ।
कांधे पे कामरिया सोहे, संग में गइया ग्वाल बाल ।
शीश बँधी पगिया जर वारी, और घुंघराले बाल ।
श्याम सलोनी सूरत तेरी, नैना तेरे विशाल ।
पाँवन में पैजनिया बाजे, नाचे दे दे ताल ।
मस्त बजे तेरी प्यारी मुरलिया, तेरे टेढ़ी-मेढ़ी चाल ।

मुझे मेरी मस्ती

मुझे मेरी मस्ती कहां लेके आई,
जहां मेरे अपने सिवा कुछ नहीं है ।
सभी में सभी में करीब में ही मैं हूं ।
सिवा मेरे अपने कहीं कुछ नहीं है ।
पता जब लगा तेरी हस्ती का मुझको,
सिवा मेरे अपने कहीं कुछ नहीं है ।। 1 ।।
सुख है न दुःख है न है शोक कुछ भी,
अजब है ये मस्ती मैंने पिया कुछ नहीं है ।
ये सागर वे लहरें ये फैन और बुदबुदे
कल्पित है जल के सिवा कुछ नहीं है ।
अरे मैं हूं आनन्द आनन्द है मेरा,
मस्ती ही मस्ती और कुछ नहीं है ।। 2 ।।
भ्रम है ये द्वन्द है जो मुझको हुआ है,
हटाया जो उसको खफा कुछ नहीं है ।
ये पर्दा दुई का हटा के जो देखा,
बस एक मैं हूं जुदा-कुछ नहीं है ।। 3 ।।

मेरे पियाजी ने बांधी

मेरे पियाजी ने बांधी कमाल पगड़ी,
थोड़ी केसरिया, थोड़ी सी लाल पगड़ी ।।
बसंती पिया जी की पगड़ी रंगाई,
सूरज की किरणें भी इसमें समाई,
देखे कहाँ पे फेंके, वो चाल पगड़ी ।। 1 ।।
मोर पंख तेरी पगड़ी पे सोहे,
इसमें कलंगी सबका मन मोहे,
कहीं कर दे न जादू, कमाल पगड़ी ।। 2 ।।
पगड़ी से पल भर भी नजरें हटे ना,
पियाजी को किसी की नजरें लगे ना,
आज इनको भी कर दे, निहाल पगड़ी ।। 3 ।।

मेरे मन में बसे हो

मेरे मन में बसे हो, बसे ही रहना,
प्रभु तन में बसे हो, बसे ही रहना ।
हाड मांस का यह है मंदिर,
आन बसे हैं इसके अन्दर ।
जिसमें बोले प्यारी मैना ।। मेरे मन में.........
मन मंदिर में जोत जगाई,
निसदिन तेरी आरती गाई ।
अंग में संग में सदा रहना ।। मेरे मन में.........
दास तुम्हारे तुम्हें पुकारे,
नयन निशदिन बाट निहारे ।
दुख में सुख में यही कहना ।। मेरे मन में.........
जब तक घट में प्राण रहेगा,
होठों पे तेरा नाम रहेगा ।
मंगलदास का यही कहना ।। मेरे मन में.........

मेरे सतगुरु मुझको देना

तर्ज :- मुझे प्यार की जिन्दगी देने वाले ...

मेरे सतगुरु मुझको देना सहारा,
कहीं छूट जाए ना दामन तुम्हारा ।। टेक ।।
तेरे बिन मन में समाये न कोई,
लगन का दीपक जलाए न कोई,
तूं ही मेरी किश्ती तूं ही तो किनारा ....
तेरे रास्ते से हटाती है दुनियां,
इशारों से मुझको बुलाती है दुनियां,
न देखूं मैं जग का झूठा इशारा ....
तेरे नाम का गान गाता रहूँ मैं,
सुबह और शाम तुझको ध्याता रहूं मैं,
तेरा नाम मुझको है प्राणों से प्यारा ....
बड़ी भूल थी जो मैं दुनिया में आया,
ब्याज गँवाया मैंने मूल गँवाया,
न भेजना इस जग में दुबारा ....

मोहे लागी लगन

मोहे लागी लगन गुरु चरनन की,
गुरु चरनन की, गुरु चरनन की ।। टेक
चरण बिना मोहे कछु नहीं भावे,
जग माया सब सपनन की ।।
भव सागर सब सूख गये हैं,
फिकर नहीं मोहे तरनन की ।।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर,
आश गही गुरु शरणन की ।।

मेरे पिया जी की बड़ी मेहरबानी

तर्ज- तेरे चेहरे से नजर नहीं हटती

मेरे पिया जी की बड़ी मेहरबानी,
जिसको हम जान न सकी ।
बन कर आये हैं प्राणनाथ स्वामी
जिनको पहचान न सकी ।
1. पहली बार जब ब्रज में थे आये,
नटखट रूप वाली लीला रचाये ।
माखन देकर के, ग्वालो को भगाये
के जिनको पहचान न सकी, मेरे पिया जी.....
2. दूसरी बार हम रास में आये,
उथले वचन फिर पिया ने सुनाये ।
निसबत जान के रास खिलाये
जिनको पहचान न सकी, मेरे पिया जी.....
3. तीसरी बार फिर अरब में आये,
रूहों के लिये फुरमान है लाए ।
जिसको खोले हैं प्राणनाथ स्वामी
जिनको पहचान न सकी, मेरे पिया जी.....
4. चौथी बार फिर श्यामा जी आये,
कर-कर कसनी वो तारतम लाये
ब्रज रास के दर्शन कराये
जिनको पहचान न सकी, मेरे पिया जी.....
5. मेहरबान फिर प्राणनाथ जी आये,
अर्श इलाही वो वाणी हैं लाये ।
जिसे पढ़ कर अखण्ड हो जाये
जिनको पहचान न सकी, मेरे पिया जी.....

मैं तो आन पड़ा

मैं तो आन पड़ा दर तेरे ।
नन्द लाल सांवरिया मेरे ।। टेक ।।
तुझे कहते हैं घट-घट वासी, तूने लाज द्रौपदी की राखी ।
जब बीच सभा में घेरे ....
तूने लाखों की पापी तारे, गिरतों को दिए सहारे ।
काटे जनम मरण के फेरे .....
मेनी नैया बीच मझधारा, नहीं सूझत कोई किनारा ।
मेरा कोई न सहारा बिन तेरे ....
जो शरण तिहारी आते, दुख संकट सब कट जाते ।
हम हैं चरन के चेरे ....

मेरे सांवरे सलोने कन्हैया

मेरे सांवरे सलोने कन्हैया तेरा जलवा कहां पर नहीं है ।
आंख वालों ने तुमको देखा है, कान वालों ने तुमको सुना है ।
तेरा जलवा उसी ने है देखा, जिनकी आंखों में पर्दा नहीं है ।।
लोग पीते हैं पी-पी के गिरते, हम पीते हैं गिरते नहीं है ।
हमने पीए हैं सत्संग के प्याले, ये अंगूरों की मदिरा नहीं है ।।
लोग कैसी-कैसी बातें हैं करते, इन बातों से हमको क्या लेना ।
लोग डरते हैं दुनिया वालों से, हमें दुनिया की परवाह नहीं है ।।
हमको तेरा ही एक सहारा, दूजा कोई सहारा नहीं है,
तेरे चरणों में सिर है हमारा, और कोई सहारा नहीं है ।।
देख लो आकर हाल हमारा, रोज नैनों से बहती हैं धारा ।
एक तूं ही तो है दिल को प्यारा, और कोई सुहाता नहीं है ।।

ओमकार त्रिविध गायत्री मन्त्रः (रहस्य)

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं ।
भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ।
ओमकार त्रिविध ज्ञान का, है अनन्त भण्डार ।
सत, रज, तम, तीन गुण, प्रकृति अनन्त अपार ।। 1 ।।
जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति, अवस्था तीन है जान ।
स्थूल, सूक्ष्म, कारण, देह तीन कर मान ।। 2 ।।
ईश्वर जीव, माया, भये, परा अपरा का ज्ञान ।
सृष्टि, स्थिति लय जगत को, है तीन स्वभाव समान ।। 3
ब्रह्मा, विष्णु, रूद्र तीनों, सगुण ब्रह्म साकार ।
स्वर्ग मृत्यु पाताल लों, है विस्तार ओंकार ।। 4 ।।
भूर्भुवः स्वः महः जनः, तपः सत्यम्
सात पाताल के ऊपर, सात स्वर्ग हैं जान ।।
वाचक हैं यह लोक के, अपने अपने ठाम ।। 5 ।।
विराट स्थूल ब्रह्म है, ऊपर अष्टावरण ।
ओंकार सो शीस है, लखे विवेकी मर्म ।। 6 ।।
निराकार सो शून्य है, काल ब्रह्म सब ठाहि ।
स्वप्न सो साकार है, त्रिगुण सृष्टि है ताहिं ।। 7 ।।
अक्षरातीत 'तत्' ब्रह्म है, सच्चिदानन्द अनूप ।।
परात्पर निजधाम है, निजानन्द निज रूप ।। 8 ।।
'सवितुर, अक्षर ब्रह्म लखो, पूरणब्रह्म तिहि पार ।
'वरेण्यं' पद अति श्रेष्ठ है, महिमा अमित अपार ।। 9 ।।
'भर्गो' तेज निज ज्ञान है, सतगुरु पूर्ण स्वरूप ।
स्वयं अक्षरातीत 'देवस्य' तारतममय निजरूप ।। 10 ।।
'धीमहि' हम सब ध्यान धरें 'धियो' बुद्धि बल हेतु ।
'यो' प्रभु सबमें आय के मेटें परस्पर 'मैं' 'तूं' ।। 11 ।।
'नः' हम सब श्रुतिन को, 'प्रचोदयात्' कर प्रीति ।
उपदेश दे निज नाम का, तारन आतम रीति ।। 12 ।।

मैं वर मांगूँ श्री धाम धनीजी

मैं वर मांगूँ श्री धाम धनीजी सों, मैं वर मांगूँ धाम ।। टेक
सेवा साथ शरण सतगुरु को, सुमिरन को निज नाम ।
सात घाट जमुना जल झीलन, संग श्यामा वर श्याम ।। 1
वसन भूषन सिनगार अनुपम, उपमा को नहीं ठाम ।
चढ़ि सुखपाल निज ताल पाल गृह, विहरत आठों जाम ।। 2
सुन्दर साथ प्रेम परिपूरन, कर पूरहि मन काम ।
जागृत ज्ञान मिल्यो है धनीजी को, मम उर होवे मुकाम ।। 3
पख पचीस देख निज लोचन, मन भावे कर ताम ।
तारतम तेज हिय में बरते, तब मिटे मन हाम ।। 4 ।।
प्रीत रीत रति पति अखण्डित, पांचमी भोम विश्राम ।
जुगल जीवन पिया 'चन्द्रसखी' को, यह वर मिल्यो है इनाम ।। 5

मोहन हमारे मधुवन में

मोहन हमारे मधुवन में तुम आया न करो ।
जादू भरी ये बांसुरी बजाया न करो ।।
सूरत तुम्हारी देखकर सलौनी सांवरी,
सुनकर के तेरी बांसुरी होती हूँ बावरी,
इस बांसुरी की तान को सुनाया न करो ।। जादू भरी....
माथे मुकुट गल माल कटि काछनी सोहे,
कानों में कुण्डल झुमके मन को मेरे मोहे,
इस चन्द्रमा के रूप से लुभाया न करो ।। जादू भरी...
अपनी यशोदा मैया की सौगन्ध है तुम्हें,
जमुना नदी के तीर पे तुम न मिलो हमें,
माखन चुराने वाले दिल चुराया न करो ।। जादू भरी....

मोहे सांवरा सलोना

मोहे सांवरा सलौना पसंद आ गया ।
नन्द का वो लाला मेरे मन को भा गया ।। टेक ।।
काली कमली बांकी चितवन, वापे वारूं मैं तो तन मन,
सुन री सखी री मेरे मन को भा गया ।। 1 ।।
मोर मुकुट सिर मुरली वारो, श्याम सखी री लागे प्यारो,
नन्द का वो लाला चितवन पे छा गया ।। 2 ।।
जब कान्हा की मुरली बाजे, पतझड़ भी सावन सो लागे,
मुरली की धुन पे सबको नचा गया ।। 3 ।।
जब से देखी सांवरी सूरत, इस दुनिया की रही न जरूरत,
मुझ पे वो कैसा ये जादू कर गया ।। 4 ।।
नींद न आये कुछ नहीं भाये, रह-रह के तेरी याद सताये,
तन में मेरे मन में सपनों में छा गया ।। 5 ।।

राज रस मीठा

राज रस मीठा मीठा रे, कोई पीवे चतुर सुजान ।
कोई पीवे चतुर सुजान, श्रीजी बड़े हैं दया निधान ।। टेक
बिना भाग मुँह से ना निकले, श्री राजश्याम का नाम ।। 1
नदी किनारे रहे जो प्यासा, भाग हीन नादान ।। 2 ।।
हीरे जैसे जनम अमोल, दो दिन का मेहमान ।। 3 ।।
ज्ञानी ध्यानी पार उतर गये, सुमर सुमर निजनाम ।। 4
केवल तू भी जाग जरा अब, पर आतम पहचान ।। 5 ।।

राजश्यामा राजश्यामा

राजश्यामा राजश्यामा, राजश्यामा कहिए ।। ध्रुव ।।
जेहि विध राखे धनी, तेहि विध रहिए
मुख में हो राज नाम, राज सेवा हाथ में ।
तू अकेला नहीं प्यारे, राज तेरे साथ में ।
विधि को विधान जान, लाभ हानि सहिए ।। 1 ।। जेहि..
किया अभिमान तो, मान नहीं पाएगा ।
गा ले प्यारे वही, जो श्री राजजी को चाहेगा ।
फल आशा त्याग, शुभ काम करते रहिए ।। 2 ।। जेहि..
जिन्दगी की डोर सौंप, हाथ दीननाथ के ।
महल में राख चाहे, झोपड़ी में वास दे ।
धन्यवाद निर्विवाद, राजश्यामा कहिए ।। 3 ।। जेहि..
आशा एक राज जी से, दूजी आशा छोड़ दे ।
नाता एक कृष्णजी से दूजी नाता तोड़ दे ।
मन सुरत प्रभु चरण अंग संग रहिए ।। 4 ।। जेहि..

राधे रानी के नथ पर मोर

राधे रानी के नथ पर मोर, नाचे ता ता थई ।। टेक ।।
नील रंग सारी सुरंग रंग चोली, लहंगे पे लग रही मोर ।।
बड़े बड़े नैनों में झीनी झीनी सुरमा, काजल की पड़ रही कोर ।।
गोरी गोरी बहियां हरी हरी चूड़ियां, मेहंदी लगी है चित्त चोर ।।
नन्हीं नन्हीं बुंदियां मेहा बरसे, घटा चढ़ी घनघोर ।।
घूंघट की ओट करी नैनों की चोट करी, मोह लिया नन्द किशोर ।।

राधे तेरे चरणों की

राधे तेरे चरणों की, अगर धूल ही मिल जाये ।
सच कहती हूं मेरी, तकदीर बदल जाये ।। टेक ।।
यह मन बड़ा चंचल है, कैसे इसे समझाऊं ।
जितना इसे समझाऊं, उतना ही मचल जाए ।। 1 ।।
सुनते हैं तेरी रहमत, दिन रात बरसती है ।
इक बूंद जो मिल जाये, दिल की कली खिल जाये ।। 2
नजरों से गिराना ना, चाहे जो भी सजा देना ।
नजरों से जो गिर जाये, मुश्किल ही संभल पाये ।। 3 ।।
राधे इस जीवन की, बस इतनी तमन्ना है ।
तुम सामने हो मेरे, मेरा दम ही निकल जाये ।। 4 ।।

राज गोपाल

राज गोपाल श्याम गोपाल,
मनोहर मुरलीधर कृष्ण गोपाल ।। टेक ।।
मन भी तेरा है, तन भी तेरा है
दया करो श्याम प्रभु, सब कुछ तेरा है ।। 1 ।।
पल पल में क्षण क्षण में
मन मंदिर में पूजा करूंगा ।
मेरी आवाज सुनो धनी प्रणाम करता हूँ ।। 2 ।।

रे मन ये दो दिन

रे मन ये दो दिन का मेला रहेगा,
न कायम ये जग का झमेला रहेगा ।
किस काम का ऊंचा महल, जो तू बनायेगा ।
किस काम का लाखों का, तोड़ा जो कमायेगा ।
रथ हाथियों का झुंड भी तेरे, किस काम आएगा,
तूं जैसा यहां पे आया था, वैसा ही जाएगा ।
तेरी सफर में सवारी की खातिर,
कन्धों में ठठरी का ठेला रहेगा ।।
तू कहता है यह दौलत, कभी आएगी मेरे काम,
पर ये तो बता, धन हुआ किसका गुलाम,
समझा गए उपदेश में हरिशचन्द्र, श्रीकृष्ण, राम,
दौलत तो नहीं रहती, रहता है सिर्फ नाम ।
छूटेगी सम्पत्ति यहीं की यहीं पर,
तेरी कमर में न धेला रहेगा ।।
साथी है मित्र गंगा के जल बिन्दु पान तक,
अर्धांगिनी बढ़ेगी तो केवल मकान तक,
परिवार के लोग साथ देंगे तो शमशान तक,
बेटा भी हक निभाएगा तो अग्निदान तक ।
इससे तो आगे भजन ही है साथी,
प्रभु के भजन बिन अकेला रहेगा ।।

वंदना मैं कर रही

वंदना मैं कर रही श्री राज की
सच्चिदानन्द प्राणों के आधार की
क्षर अक्षर से न्यारा वो निजधाम है
अक्षर को भी सुध नहीं उस धाम की ।। 1 ।।
खेल झूठा देखने को आयी हैं
आके भूली बातें जो धाम की ।। 2 ।।
आये पियाजी हमें जगाने धाम से
नींद में थी उनकी ना पहचान की ।। 3 ।।

वृन्दावन विपिन

वृन्दावन विपिन श्याम बाँसुरी बजाई ।। टेक ।।
प्रथमहिं श्रृंगार करे, मुरली मुख माहिं धरे ।
मधुर स्वर सबहीं परे, मोहन धुनि लाई ।। 1 ।।
सखियन के नाम लिये, सुनत जगत त्याग दिये ।
उलटे ही श्रृंगार किये, होश भी न धाई ।। 2 ।।
योगमाया आय मिली, कालमाया देह दली ।
नवतन तन साजि चली, मिली सकल जाई ।। 3 ।।
उथले पिया रास वचन, लाग्यो तन बाण सघन ।
उपजत नाहीं एक यत्न, मूर्छा माहीं रवाई ।। 4 ।।
तामसी जवाब दियो, प्यारे गहि अंक लियो ।
पूर्ण सुख रास कियो, ज्ञानदास गाई ।। 5 ।।

श्याम तेरी वंशी

श्याम तेरी वंशी बजे धीरे-धीरे,
बजे धीरे-धीरे यमुना के तीरे ।।
इत मथुरा उत गोकुल नगरी,
बीच में जमुना बहे धीरे-धीरे ।
इत में ललिता उत में विशाखा,
बीच में राधा चले धीरे-धीरे ।
कदम की डारी पे झूला पड़ो है,
राधा और मोहन झूले धीरे-धीरे ।
हम सब आए हैं तेरी शरण में,
हमको भी दर्शन मिले धीरे-धीरे ।

श्याम को जाना नहीं

श्याम को जाना नहीं, सौ साल जी कर क्या मिला ।
खुद को पहचाना नहीं, सौ साल जी कर क्या मिला ।। टेक
बांध गठरी माल धन की, तूने अन्तिम श्वांस तक ।
साथ कुछ जाना नहीं है, बोझ ढोकर क्या मिला ।। 1
नीर नदियों का पिया तूने, अमृत पीया नहीं नाम का ।
दाग मन के ना धुले तो, तन को धोकर क्या मिला ।। 2
तुच्छ विषयों की लगन में देव दुर्लभ तन गंवाया ।
हाथ कुछ आना नहीं तन रतन खोकर क्या मिला ।। 3
सेवा करके सतगुरु की आत्मा को जान ले ।
पेट खातिर पेट का ही, दास बनकर क्या मिला ।। 4

श्री कृष्ण जिनका नाम है

श्रीकृष्ण जिनका नाम है, गोकुल उनका धाम है ।
ऐसे श्री ब्रजराज को बारम्बार प्रणाम है ।। टेक ।।
यशोदा जिनकी मैया है नन्दजी बपैया हैं ।
ऐसे श्री ब्रजराज को बारम्बार प्रणाम है ।।
राधा जिनकी प्यारी है कृष्ण जी कन्हैया हैं ।
ऐसे श्री घनश्याम को बारम्बार प्रणाम है ।।
दीन दुःखी के फन्द छुड़ाये, ब्रजनारी की लाज बचाए ।
ऐसे श्री दीनदयाल को बारम्बार प्रणाम है ।।

सच्चे साथी

सच्चे साथी पार के जगाने आये हैं ।
श्री निजनाम सुनाने आये हैं ।। टेक ।।
पार से आकर भूल गई थी, झूठे खेल का रस पीकर ।
कई युग मुझको बीत गये थे, बार-बार मरती थी जी कर ।
कर्मों के बंधन से छुड़ाने आये हैं ।। 1 ।।
मोह की नींद में सोकर मैंने, झूठ में अपना समय गंवाया ।
ये है मेरा ये है तेरा, मैंने कुछ पहिचान न पाया ।
पिण्ड ब्रह्मांड लखाने आये हैं ।। 2 ।।
दे निजनाम उजाला करके, आतम मेरी पिया ने जगाई ।
[illegible] राह दर्शाकर, पिया ने प्रेम की राह बताई ।
भेष बदल समझाने आये हैं ।। 3 ।।
[illegible] भाग हैं, पिया ने जगाई घर आकर हमारे ।
[illegible] पड़ी हुई को, हाथ पकड़कर दिया सहारा ।
[illegible] निजधाम बुलाने आये हैं ।।

श्याम नाम के हीरे मोती

श्याम नाम के हीरे मोती मैं बिखराऊं गली गली ।
ले लो रे कोई प्रभु का प्यारा, आवाज लगाऊं गली गली ।।
दौलत के दीवानों सुन लो, एक दिन ऐसा आएगा ।
धन दौलत और माल खजाना, यहीं धरा रह जाएगा ।
सुन्दर काया माटी होगी, चर्चा होगी गली-गली ।।
जिस जिसने ये हीरे लूटे, वे तो मालामाल हुए ।
धन दौलत के बने पुजारी, आखिर में बर्बाद हुए ।
दो दिन का यह चमन खिला कर, मुरझाएगी कली-कली ।।
मित्र प्यारे सगे सम्बन्धी, एक दिन तुझे भुलाएंगे ।
कल तक जो अपना कहते थे, आग में तुझे जलाएंगे ।
जगत सराय दो दिन का है, आखिर होगी चला-चली ।।

श्री कृष्ण रूप

श्रीकृष्ण रूप पूर्ण स्वरूप, तुमको हमारा है परनाम ।
नवलविहारी कृष्णमुरारी, भक्तों के हितकारी श्याम ।।
भव दुःख भंजन जन मन रंजन, तन मन अर्पण सुन्दर श्याम ।।
हे रासविहारी महासुखकारी, मुझको अपना दीजिये ध्यान ।।
परमधाम को भूल गये हम, दीजिये दर्शन श्यामा श्याम ।।
आये पड़े भवसागर में हम, पार लगाओ हे धनी श्याम ।।
हम बालक श्रीकृष्ण तुम्हारे, दिखाओ अपना ओ निजधाम ।।
भुलन हमारो माफ करो धनी, हम दास तुमारे हैं नादान ।।
तुम स्वामी हम सेवक तुम्हारे, दीजिये अपना तारतम ज्ञान ।।
चिद्घनरूप पूर्ण स्वरूप, अक्षरातीत है ओ निजनाम ।।

श्यामा श्याम हो

श्यामा श्याम हो धनी धाम हो,
तेरे चरणों में मेरा प्रणाम हो ।।
रंग महल में रहनी हमारी,
जुगल स्वरूप की छवि जहाँ प्यारी ।। 1 ।।
मूल मिलावा खिलवत खाना,
परआतम का असल ठिकाना ।। 2 ।।
प्रीत पिया की अति सुखदायी,
पर निसवत बिना किसी ने न पाई ।। 3 ।।

श्री राजचरण

श्रीराज चरण चित्त लाना, कभी न भुलाना
ए जीवन दो दिन का ।। ध्रुव ।।
यह जीवन है कागज की नौका ।
हवा लगे उड़ जाना, कभी न भुलाना ।। 1 ।।
यह जीवन है मिट्टी का पुतला -2 ।
बूंद पड़े गल जाना, कभी न भुलाना ।। 2 ।।
यह जीवन है चन्दन की लकड़ी -2 ।
आग लगे जल जाना, कभी न भुलाना ।। 3 ।।

श्री राज चरणों के पास

श्री राज चरणों के पास रखना
मेरे अवगुण सारे माफ करना ।। श्री राज.......
माया मुझे भुलायेगी, आप से दूर करायेगी
मेहेरवान वादा अपना, याद रखना ।। श्री राज........
मोह ममता ने जकड़ लिया, मेरा दामन पकड़ लिया
इन झूठे झमेलों से, आजाद रखना ।। श्री राज........

श्री प्राणनाथ भज रे

श्री प्राणनाथ भज रे, स्वामी प्राणनाथ भज रे ।
ब्रह्मसृष्टि के कारण, सुन्दर रूप धरे ।।
सच्चिदानन्द परमात्मा पूर्णब्रह्म भरता ।
अक्षर ब्रह्म पुजारी, जो सृष्टि करता ।। 1 ।।
लीला श्री निजधाम की, जो कोई गावे ।
आवागमन मिटावे, मुक्ति फल पावे ।। 2 ।।
पढ़े श्री तारतम वाणी, नित उठ ध्यान धरे ।
श्री निजनाम का जपना, कारज सिद्ध करे ।। 3 ।।
भक्तन के दुःख हरता, कलियुग पाप टरे ।
मैं हूँ पतित अभागी, श्री जी कृपा करे ।। 4 ।।
तुम हो कृपा के सागर, कृपा करो स्वामी ।
अपना 'दीन' उबारो, प्रभु अंतरयामी ।। 5 ।।

श्री राज श्यामा

श्री राज श्यामा श्याम को मेरा प्रणाम है ।
कर जोड़ चरणों लागिये, तजना न काम है ।। 1 ।।
परमधाम अन्दर मूल में, प्रभु का मुकाम है ।
जहाँ पर विराजे श्री राज जी, कर बाहें बाम है ।। 2 ।।
मध्य में सिंहासन नूर का, छवि अजब सार है ।
जहाँ थम्म चौसठ घेर के, बने चार द्वार हैं ।। 3 ।।
गृद जुत्थ चालीस बैठियाँ, सखी सहस्त्र बार हैं ।
सुख सिन्ध शोभा देखिये, महिमा अपार है ।। 4 ।।
जीवन जुगल पति के चरण, तन मन निछावर है ।
गोमन सदा इस रूप का, करता दीदार है ।। 5 ।।

श्री राजश्यामा, श्री राजश्यामा

श्री राजश्यामा, श्री राजश्यामा, श्री राजश्यामा, धनीधाम ।
श्री कृष्ण श्यामा, श्रीकृष्ण श्यामा, श्री कृष्ण श्यामा, निजनाम ।।
सतचिद आनन्द भावघन, निजानन्द निजनाम ।।
श्रीकृष्ण नाम अहं भजे, जो अनादि परमधाम ।। 1 ।।
शून्य शब्द के पार जो, निराकार निर्वान ।
निराकार के पार जो, अक्षर ब्रह्म निदान ।। 2 ।।
पार अक्षरातीत जो, सत चित आनन्द रूप ।
लीला रसमय जुगलवर, नित्य विहार अनूप ।। 3 ।।
सत्य सदा व्रतमान सम, अचल अनन्त अभेद ।
अपरिच्छंद अविकार एक, सतपद वरणत वेद ।। 4 ।।
पुनि वह चेतन ज्ञानघन, पूरण परम प्रकाश ।
सत्य सनातन सर्वगत, चिद पद सर्व निवास ।। 5 ।।
पुनि वह सुखरूपी सदा, सत अखण्ड सुख धाम ।
नित्यानन्दानन्द पद, सब विधि पूरन काम ।। 6 ।।

श्याम पिया मोरी

श्याम पिया मोरी रंग दे चुनरिया ।। टेक ।।
ऐसी रंग दे कि रंग नाही छूटे,
धोबिया धोये चाहे सारी उमरिया ।। 1 ।।
लाल ना रंगाऊं, मैं हरि ना रंगाऊं,
अपने ही रंग में रंग दे चुनरिया ।। 2 ।।
बिना रंगाये मैं तो घर नहीं जाऊंगी,
बीत ही जाये चाहे सारी उमरिया ।। 3 ।।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर,
श्याम चरण में लागी लगनियां ।। 4 ।।

श्यामा-श्यामा रटते-रटते

तर्ज :- नगरी-नगरी द्वारे-द्वारे ढूंढूँ सांवरिया ....

श्यामा-श्याम रटते-रटते हो गयी रे बावरिया,
ना जाने किस कारण भूले, निर्मोही सांवरिया ।। टेक ।।
बेदर्दी कान्हा के गम में, निदियां नहीं आवे रे-2,
रोवत-रोवत थक गये नैना, फिर भी चैन न पावे रे-2,
निशदिन जोऊं शाम सबेरे, मोहन की डगरिया ....
मथुरा की गलियों में ढूंढ़ा, ढूंढ़ा गोकुल सारा रे-2,
बृज-बनिता से पूछ-पूछ कर, मेरा भी मन हारा रे-2,
देख दशा विरहनी की, सारी हंसती है नगरिया ....
आशाओं का दीपक लेकर, जोऊं बाट तिहारी रे-2,
अब तो आकर गले लगाओ, मदन मोहन मुरारी रे-2,
दर्शन करके श्याम सुन्दर के, पुलकित रे पुतरिया.....

सत संगत में प्रेमी जनों को

यह पुष्प लेकर हाथ में, करूँ अर्पण आज ।
विनती यह स्वीकार जो, बांह गहे की लाज ।।
दास मंगल दास हो, साथ सुन्दर धाम ।
आशीष यह दीजिये, होवे पूरन काम ।।
सत संगत में प्रेमी जनों को, प्रेम प्रणाम सुनाता हूँ ।।
प्रेम के दर्शन प्रेम के पर्शन, दिन दिन ध्यान लगाता हूँ ।
प्रेमी जनों की कृपा दृष्टि, सदा दिन होना चाहता हूँ ।
प्रेम पंथ से आकर के मैं, प्रेम से शीश झुकाता हूँ ।।

श्रीकृष्ण सच्चिदानन्द पारब्रह्म

श्रीकृष्ण सच्चिदानन्द पारब्रह्म
पुरुषोत्तम अक्षरातीताय नमः
श्री कृष्णाय नमः । सच्चिदानन्दाय नमः ।
पारब्रह्मणे नमः । पुरुषोत्तमाय नमः ।
अक्षरातीताय नमः । श्री निजानन्दाय नमः ।
श्री प्राणनाथाय नमः । श्रीसच्चिदानन्दगुरुदेवाय नमः ।
नमो विज्ञान-रूपाय, परमानन्द-रूपिणे ।
कृष्णाय गोपिनाथाय, गोविन्दाय नमो नमः ।
श्री कृष्ण परमानन्द पुरुषोत्तम सत्पते
मायान्धकार मार्तण्ड, मामुद्धार भवार्णवात् ।। 1 ।।
सच्चिदानन्दरूपाय विश्वोत्पत्यादि हेतवे ।।
तापत्रय विनाशाय श्रीकृष्णाय वयं नुमः ।। 2 ।।
चिदादित्यं किशोरांगं परे धाम्नि विराजितम् ।
स्वरूपं सच्चिदानन्दं विर्विकारं सनातनम् ।। 3 ।।
आनन्दकन्दं प्रभु देवचन्द्रं, व्रजेशरूपेण पुरापि जातम् ।
प्रविश्य प्राप्तं प्रिय प्राणनाथम्,परेश-पूर्णं सततं नमामि ।। 4
ब्रह्म-प्रिया जागरणाय जातः, सर्वस्वपाता भवसिन्धु-त्राता ।
विज्ञान-दाता निजधर्म-धाता, दीनैक-बन्धो शरणं प्रपद्ये ।।
ब्रह्मानन्दं परम सुखदं, केवलं ज्ञानमूर्तिम् ।
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं, तत्त्वमस्यादि-लक्ष्यम् ।।
एकं नित्यं विमलमचलं, सर्वदा साक्षिरूपंम् ।।
भावातीतं त्रिगुणरहितं, सद्गुरुं तन्नमामि ।।
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वरः ।।
गुरु : साक्षात् परंब्रह्म, तस्मै श्रीगुरवे नमः ।
अखण्ड-मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ।। 7 ।।

श्री प्राणनाथ कृपाल भजुं

श्री प्राणनाथ कृपाल भजुं, भवजनित ताप निवारणम् ।
करि तारतम्य प्रकाश धरि तनु, अखिल विश्व उद्धारणम् ।
श्री ब्रह्मज्ञान निधान गुणनिधि, शुभ सुमंत्र प्रतारकम् ।
निज भक्त हेतु प्रकाश करि बहु, सुखद धर्म प्रचारकम् ।।
भजूँ पंच रूप समन्वितं अति, परम प्रेम सुभाजनम् ।
धरि दिव्य रूप अलौकिकं नित, चरित नूतन राजनम् ।।
श्री पारब्रह्म स्वरूप गुरु जग, प्रकट तारण कारणम् ।
जन प्रेम नेम निवाहने पन, हृदय निश्चल धारणम् ।।
भजु ईश्वरेश कृपायतन प्रभु, श्री विजया अभिनन्दनम् ।
श्री जोगीराज मुनीश सब कलि, कलुष मोह निकंदनम् ।।
व्रज माहिं कृष्ण स्वरूप धरि शिशु, चरित प्रेम सुहावनम् ।
करि रास हांस विलास बहु विधि, प्रियन के मन भावनम् ।
पुनि आई जागनी रास करि निज, जनन मोह विनाशनम् ।
निज धाम धाम विलास सुख दई, सकल सुन्दर भाषणम् ।।
सो पूर्णब्रह्म स्वरूप सतगुरु, मम हृदय मंदिर भावनम् ।
यह बार बार विलोकि छवि, मन मुदित होत रुपावनम् ।।
करि बार बार प्रणाम नमि उर, गहत पादु नवाम्बुजम् ।
धरि शीश ऊपर रेणु पद नित, रटत कृष्ण पदाम्बुजम् ।
आनन्द कन्द विलोकि पल पुट, युगल रूप भजाम्यहम् ।
श्री कृष्ण चन्द्र समेत प्रियगण, रवि सहस्र नमाम्यहम् ।।

श्री कृष्णार्पणमस्तु

एकोपि कृष्णस्य कृतः प्रणामो दशाश्वमेधाऽवभृथेनतुल्यः ।
दशाश्वमेधी पुनरेतिजन्मः कृष्णः प्रणामी नपुनर्भवाय ॥

एक सनातन ब्रह्म है, एक सनातन धर्म ।
एक सनातन शक्ति है, ज्ञान सनातन धर्म ॥ 1 ॥
अस्ति पद एक ब्रह्म है, नास्ति नाना रूप ।
नाना मत को छोड़ के, ग्रहो ब्रह्म एक रूप ॥ 2 ॥
सतपद अक्षर ब्रह्म है, पूर्ण ब्रह्म चिद नाम ।
अनन्त आनन्द आतमा, सच्चिदानन्द परनाम ॥ 3 ॥
नारायण निज रूप का, करे निरन्तर ध्यान ।
करे प्रणाम परब्रह्म को, अक्षर आतम ज्ञान ॥ 4 ॥
विष्णु व्यापक रूप में, करें तपस्या गूढ़ ।
प्रणाम करे श्री कृष्ण को, भव जल तारण मूल ॥ 5 ।
ब्रह्मा वेद पढ़त हैं, कर कर कृष्ण प्रणाम ।
गोप ग्वाल के लाल का, जपे निरन्तर नाम ॥ 6 ॥
शंभु शिव रूप होत हैं, करे प्रणाम व्रजराज ।
नित्य निरन्तर ध्यान में, जपे नाम श्रीराज ॥ 7 ॥
गणेश पार्वती सुत भी, करे गान गुन रूप ।
लेखनी लेकर हाथ में, करे प्रणाम अनुरूप ॥ 8 ॥
राम जपे निज राम पद, कहे कृष्ण प्रणाम ।
बेहद लीला कृष्ण की, होवे पूरण काम ॥ 9 ॥
पर आतम पर ब्रह्म को, करे कृष्ण प्रणाम ।
ध्यान धरे निजधाम का, आतम मूल मुकाम ॥ 10 ॥

लक्ष्मी लक्ष्य करत है, राधाकृष्ण धर ध्यान ।
विष्णु पास बैठ कर, करे कृष्ण प्रणाम ॥ 11 ॥
दुर्गा दुर्लभ नाम का, आराधे दिन रात ।
अमर कथा के श्रवण में, सुमिरे श्रीकृष्ण सुगात ॥ 12 ॥
गायत्री निरन्तर गान करे, तद् ब्रह्म पद पार ।
कृष्ण कृष्ण सुमिरण करे, वेद ऋचा उर धार ॥ 13 ॥
नारद नमन करत हैं, कृष्ण कृष्ण गुण गान ।
सनकादिक सुकदेवजी, कहे कृष्ण प्रणाम ॥ 14 ॥
ऋषि मुनि सबहि ध्यान धरे, भजे कृष्ण को नाम ।
वेद शास्त्र के मध्य में, मूल धर्म प्रणाम ॥ 15 ॥
आकाश सदाशिव होत है, कृष्ण श्याम प्रकाश ।
ध्यान धरे आकाश में, भयो श्याम आकाश ॥ 16 ॥
कृष्ण प्रणाम करत है, श्याम सरूप आकाश ।
चन्द्र सूर्य तारागण, करे प्रणाम प्रकाश ॥ 17 ॥
वहे वायु प्रणाम को, कृष्ण रूप धर ध्यान ।
ईश ईश रटना रटे, कृष्ण प्रणाम बखान ॥ 18 ॥
पावक पवित्र होकर, हवन करे प्रणाम ।
श्रीकृष्णार्पण सब करत हैं, है प्रणाम निजनाम ॥ 10 ॥
जल वारि को रूप है, बहत है दिन रात ।
नमन करे कृष्ण सिन्धु को, प्रणामी निज जात ॥ 20 ॥
धरणी धरत है ध्यान में, वंशीवट को धाम ।
पृथ्वी गौ रूप धार के, कहे कृष्ण प्रणाम ॥ 21 ॥
व्यापक है सब जीव में, प्रणाम सनातन धर्म ।
प्रणाम करो श्रीकृष्ण को, छूटे भजवल कर्म ॥ 22 ॥

पीर पैगम्बर ध्यान में, देखे श्याम आकाश ।
ऊपर है करतार एक, कृष्ण प्रणाम प्रकाश ।। 23 ।।
चर अचर सब ही करे, कृष्ण प्रणाम अपार ।
मनुष्य तन में होकर, करो सुफल अवतार ।। 24 ।।
व्यापक धर्म नमन है, कृष्ण प्रणामी नाम ।
नमन करे परब्रह्म को, पहुँचे मूल मुकाम ।। 25 ।।
सत्य सनातन धर्म है, सनातन सत्य प्रणाम ।
नमन धर्म है ज्ञान का, ब्रह्म सनातन धाम ।। 26 ।।
क्षर अक्षर के पार है, श्रीकृष्ण निजधाम ।
भक्ति अनन्य श्री भागवत, एक ब्रह्म का नाम ।। 27 ।।
सर्व धर्म को जान के, भजो एक श्रीराज ।
आतम ज्ञान अनादि है, श्यामा श्याम समाज ।। 28 ।।
कृ-कृपा के सागर, नागर नवल किशोर ।
स-सबहि चर अचर के, सुखदाता के ठौर ।। 29 ।।
न-नवल शोभा लिये, आनन्द दाता धाम ।
कृपा सत्य ओ नेह से, पूरे सबही काम ।। 30 ।।
प्र-प्रभु श्रीकृष्ण हैं, आतम के परधाम ।
ना-नाम धाम है आतमा, असंख्य जी को ठाम ।। 31 ।।
म-महिमा श्री कृष्ण की अन्तर्यामी रूप ।
प्रणाम करो श्री कृष्ण को, मिले धाम सुख रूप ।। 32 ।।
सर्व धर्म को छोड़कर, एक धर्म ग्रहे सार ।
कृष्ण प्रणामी धर्म में, सर्व धर्म विस्तार ।। 33 ।।
मंगल कृष्ण प्रणाम है, मंगल धर्म प्रकाश ।
मंगल सुन्दर साथ है, मंगल धाम उजास ।। 34 ।।

स्वसं वेद ब्रह्म वाणी है

स्वसं वेद ब्रह्म वाणी है सब ग्रंथों का सार ।
इस ग्रंथ को जो पढ़ता है, हो जावे बेड़ा पार । साधो...
1. तारतम मंत्र निज रूप है, स्वसं वेद का सार ।
इस मंत्र को जो जपता है, आत्मा भव से पार ।।
2. अगम वेद निगम कहें, पाएँ न ब्रह्म घट ।
जो होवे यहाँ ब्रह्म सृष्टि मिल जावे वह घट ।।
3. भविष्य पुराणों में जो कहें, सब प्राणनाथ में आए ।
माया ब्रह्म की निरूपण करने, महामति प्राणनाथ आए ।।
4. जो इस वेद को पढ़ता है, आत्मा रोग से दूर ।
पाया भेद 'सुवेद' ने, होवे नूर से पूर ।।

सन्तन के संग लाग रे

सन्तन के संग लाग रे, तेरी अच्छी बनेगी ।
अच्छी बनेगी तेरी किस्मत जगेगी ।
होय तेरो बड़ो भाग रे, तेरी अच्छी बनेगी ।।
सन्तन संग करि पुण्य कमाई,
राम चरण अनुराग रे, तेरी........
ध्रुव जी की बन गई, प्रहलाद जी की बन गई ।
प्रभु सुमिरन में जाग रे, तेरी.......
कागा से तुझे हंस करेंगे,
मिट जायें उर के दाग रे, तेरी.......
मोह निशा में बहुत दिन सोये,
जाग सके तो अब जाग रे, तेरी........
सुत वित नारि तीन आशायें
त्याग सके तो त्याग रे, तेरी.........
कहत 'कबीर' नाम सुमिरन में,
पाग सके तो पाग रे, तेरी........

सबसे ऊँची प्रेम सगाई

सबसे ऊँची प्रेम सगाई ।
दुर्योधन की मेवा त्यागी, साग विदुर घर खाई ।। 1 ।।
जूठे फल शबरी के खाये, प्रेम विवश रघुराई ।। 2 ।।
प्रेम के बस अर्जुन रथ हांक्यो, भूल गये ठकुराई ।। 3 ।।
ऐसी प्रीत बढ़ी वृन्दावन, गोपियन नाच नचाई ।। 4 ।।
सूरदास इस लायक नाहिं, कहँ लगि करौं बढ़ाई ।। 5 ।।
सबसे ऊँची प्रेम सगाई ।

सतगुरु की वाणी

सतगुरु की वाणी पढ़ने से,
जीवन हमारा सुन्दर होगा ।
भवसागर तर जायेंगे, और बेड़ा पार होगा ।। टेक ।।
माया के दुखों से छुटकारा हम पायेंगे ।
धनी कृपा के पात्र हम बन जाएँगे ।
धनी चरणों का सहारा होगा, जीवन हमारा....(1)
रहेंगे संसार में सुरता होगी निजधाम में
अपनी परआत्म में मिलेंगे निजधाम में
मूल-मिलावा हमें प्यारा होगा, जीवन हमारा....(1)
ये माया तो आनी जानी, झूठा ये संसार है ।
श्री प्राणनाथ की वाणी पढ़ लो, इससे बेड़ा पार है ।
सुन्दर समय वो सुहाना होगा, जीवन हमारा....(1)

सतगुरु ब्रह्मानन्द

(ब्रह्मसृष्टियों की पद्धति)

सतगुरु ब्रह्मानन्द हैं, सूत्र है अक्षर रूप ।
शिखा सदा इनसे परे, चेतन चिद जो अनूप ।। 1 ।।
सेवन है पुरुषोत्तम, गोत्र चिदानन्द जान ।
परम किशोरी इष्ट है, पतिव्रता साधन मान ।। 2 ।।
श्री जुगल किशोर को जाप है, मंत्र तारतम है सोय ।
ब्रह्मविद्या देवी सही, पुरी नौतन मम जोय ।। 3 ।।
अठोत्तर सो पख शाखा सही, शाला हे गौलोक ।
सतगुरु चरण को क्षेत्र है, जहाँ जाय सब शोक ।। 4 ।।
सुख विलास नित्य वृन्दावन, ऋषि महाविष्णु है सोय ।
वेद हमारो स्वसम् है, तीरथ यमुना जोय ।। 5 ।।
शास्त्र श्रवण श्री भागवत, बुद्धि जाग्रत को ज्ञान ।
कुल मूल हमारो आनन्द है, फल नित्य विहार प्रमान ।। 6
दिव्य ब्रह्मपुर धाम है, घर अक्षरातीत निवास ।
निजानन्द है सम्प्रदा, ये उत्तर प्रश्न प्रकाश ।। 7 ।।
धनी श्री देवचन्द्र जी निजानन्द, जिन प्रगट करी सम्प्रदा येह ।
तिनथें हम यह लखी, हम द्वार पावें अब तेह ।। 8 ।।

सारे जहां के मालिक

सारे जहां के मालिक, तेरा ही आसरा है ।
राजी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रजा है ।।
हम क्या बताएं तुमको, सब कुछ तुम्हें खबर है ।
हर हाल में हमारी, तेरी तरफ नजर है ।
किस्मत है वो हमारी, जो तेरा फैसला है ।। 1 ।।
हाथों को हम दुआ की खातिर ले जाएं कैसे ।
सजदे में तेरे आकर, सर को झुकाएं कैसे ।
मजबूरियां हमारी सब तूं ही जानता है ।। 2 ।।
रो कर कटे या हँस कर, कटती है जिन्दगानी ।
तूं गम दे या खुशी दे, सब तेरी मेहरबानी ।
तेरी खुशी समझ कर, सब गम भुला दिया है ।। 3 ।।
दुनिया बना के मालिक, जाने कहां छिपा है ।
आता नहीं नजर तू, बस एक यही गिला है ।
भेजा हे इस जहां में, जो तेरा शुक्रिया है ।। 4 ।।

सुमिरो प्रथम

सुमिरो प्रथम उन्हीं सतगुरु को,
जिन्होंने तारतम ज्ञान दिया ।। टेक ।।
भरम जाल से छुड़ा करके, निर्भय पद दिखाए दिया ।। 1
पशु रूप में उन्हीं ने हमको, इन्सान बनाए दिया ।। 2 ।।
सिर पर हाथ धरके हमारे, बार-बार वरदान दिया ।। 3
पाप-पुण्य जो कुछ थे हमारे, जुदा-जुदा करके छान दिया ।। 4
कुटुम्ब परिवार डुबाने वाले, सतगुरु फकत बचाय दिया ।। 5

स्वागतम् कृष्ण

स्वागतम् कृष्ण सुस्वागतम् कृष्ण ।
स्वागतम् सुस्वागतम् शरणागतं कृष्ण ।
मथुरा पुरी कृष्ण मधुसूदन कृष्ण ।
स्वागतम् सुस्वागतम् शरणागतं कृष्ण ।
मीरा बाई के कृष्ण, सूरदास के कृष्ण
स्वागतम् सुस्वागतम् शरणागतं कृष्ण ।
निजधाम के कृष्ण, परमधाम के कृष्ण ।
स्वागतम् सुस्वागतम् शरणागतं कृष्ण ।

हम तो रूहें फरामोश हैं

तर्ज- तुम तो ठहरे परदेशी.........

हम तो रूहें फरामोश हैं, आप ही जगाओगे,
नींद का जो डाला पर्दा, कब इसे हटाओगे ।
1. आपके हुक्म से धनी, खेल हम देख रहे हैं,
कौल फैल हाल रूहों के, आप ही बनाओगे,
हम तो रूहें......
2. पिया तेरी अंगना यहां, रात दिन तड़फ रही
इश्क भरी नजरों से, जाम कब पिलाओगे,
हम तो रूहें.....
3. अर्श से उतर आये हम, चरणों तले दोऊ तन
एक बल पड़ा बीच में, कब उसे हटाओगे,
हम तो रूहें.....
4. अब तो बस ये ही लगन, देखूं अपना मूल वतन
मिल कर कभी न बिछड़े, वो दिन कब दिखाओगे,
हम तो रूहें.....

हर स्वांस पिया गुण गाती चल

हर स्वास पिया गुण गाती चल,
फिर तुझको आनन्द अपार मिले ।
जब हर पल, धनी जी की याद आये,
फिर यहीं तुझे श्री राज मिले ।
हर स्वांस...............
1. पिऊसो अवगुण अलेखे हम किये
तापर धनी जी के ऐसे गुण
तुम फेर फेर मुझ पर दया करी,
मैं फेर फेर किये विघन ।
इन विध, सुख दिए हैं अलेखे
तुझे ऐसे सखी भरतार मिले
हर स्वास...............
2. श्री महामति कहे गुण इन धनी के,
सो इन मुख कहे न जाएं ।
एक ही गुण, जब याद आए
तो तब ही उड़े ये अरवाहें
अब धनी जी के गुण की क्या कहूं
इन गुणों का नाहीं शुमार मिले ।
हर स्वास..............
3. सखी ना था भरोसा हमको
कि भवजल उतरे पार,
इन जुबां केती कहूं, इन मेहर को नाहीं शुमार ।
बढ़ते-बढ़ते मेहर बढ़ी
अब वार न कोई पार मिले
हर स्वास..............

हे प्रभु ! मुझे बता दो

हे प्रभु ! मुझे बता दो, चरणों में कैसे आऊँ ।
माया के बन्धनों से, अब मुक्ति कैसे पाऊँ ।।
न जानू मैं कोई पूजन, अज्ञानी हूँ मैं भगवन् ।
करना कृपा दयालु, बन्धन से छूट जाऊँ ।।.......
मैं हूँ पतित स्वामी, तुम हो पतित पावन ।
अवगुण भरा हृदय से, इसे कैसे मैं दिखाऊँ ।।......
अच्छा हूँ या बुरा हूँ, जैसा भी हूँ तुम्हारा ।
ठुकराओ न मुझे अब, चरणों में सिर झुकाऊँ ।।......
भगवन इतना कीजे, अपनी ही भक्ति दीजे ।
हो प्रेम आप में ही, आपको न भूल पाऊँ ।।........

हम सब कृष्ण के बालक हैं

हम सब कृष्ण के बालक हैं,
दुनियां में भक्ति बढ़ा देंगे ।
सबके दिल में सच्चाई का,
अब ज्ञान की ज्योति जगा देंगे ।। टेक ।।
निर्भय बन कर इस दुनिया में, प्रेम का पाठ पढ़ा देंगे ।
आपस में हम सब जन मिल के,
श्री कृष्ण का नाम सदा लेंगे ।। 1 ।।
श्री कृष्ण हमारे सदा प्यारे, सब दुखों को हटा देंगे ।
गीता ज्ञान पढ़ा करके हम, वेद का सार करा देंगे ।। 2
ब्रह्म सनातन सबके ऊपर, ज्ञान के प्रेम पढ़ा देंगे ।
प्रेम है कर्म, प्रेम है धर्म, एक ही राह बता देंगे ।। 3 ।।
कृष्ण के नामी हैं परनामी, सब को प्रेम सिखा देंगे ।
प्रेम का धाम, प्रेम का ज्ञान, प्रेम प्रणाम सुना देंगे ।। 4

हे धनी श्री प्राण प्रीतम

हे धनी श्री प्राण प्रीतम, मुझे शरण में लीजिए ।
बुद्धि मेरी करके निर्मल, आत्म पावन कीजिए ।। टेक ।।
दीजिए गुण ज्ञान गौरव, तारतम ज्ञान का ।
दिव्य हो आलोक उर में, नाश हो अज्ञान का ।। 1 ।।
हो नहीं द्वेष मन में, प्रेम हो सतसंग से ।
भक्ति मुझ में हो सदा, अभ्यास होवे ध्यान का ।। 2 ।।
दीनता हो स्वभाव मेरा, भाव हो तव नाम से ।
विनष्ट होवे मोह ममता, भाव हो निजधाम का ।। 3 ।।
मांगता हूँ जोड़ कर एक, और भी करुणानिधे ।
प्रेम पूर्ण दो सदानन्द, कंज पद अभिराम का ।। 4 ।।

हो गुरुदेव दया के सागर

तर्ज :- क्या मिलिए ऐसे लोगों ......

हो गुरुदेव दया के सागर, विनती मेरी सुन लेना,
जीवन नया डगमग डोले, उसको पार लगा देना ।। टेक
तेरी महिमा सबसे निराली, तुम करुणा के सागर हो,
जो भी शरण में आये तेरी, भरते उसकी गागर हो,
जितना भरोसा करके आया, उतनी कृपा तुम कर देना ...
जो भी तेरे दर पर आया, खाली नहीं लौटाया है,
ऐसा क्या कसूर है मेरा, दिल से मुझे भुलाया है,
भूल हुई है जो भी मेरी, उसको दिल से भुला देना ...
भटक रहा हूं इधर-उधर मैं, बाट चलूँ मैं डगर-2,
ज्ञान की ज्योति ऐसी जला दो, कृपा हो जाये तेरी अगर,
भगत तेरा तेरी राह निहारे, इक बार दर्श दिखा जाना ...

सोई रसना निजनाम कहै रे

सोई रसना निजनाम कहै रे ।। टेक ।।
नरत्तर काढ़ि जीभ गहि डारो, मुख में चमड़ा नाहिं भलो रे ।।
श्रवण सोई जो सुने भागवत, नैन सोई निज रूप लहैरे ।
सीस वही जो नवे संतन को, कर सोई गुरु चरण गहैरे ।।
पांव सोई परमारथ धावै, प्रेम पंथ पर सदां रहै रे ।
पेट सोई पर पेटहिं पालै, कांध सोई धर्म भार सहै रे ।।
हियो सोई जामें वसें सदा प्रभु, कहै कमुंद सोई साधु अहैरे ।

साधो भाई भेष में

साधो भाई भेष में भेद है न्यारा,
कोई जानेगा जानन हारा ।। टेक ।।
ज्यों कदली सब एक वरन हैं, पत्र फूल फल डारा ।
है कपूर काहू विरले में, सो केला है न्यारा ।। 1 ।।
रनघन जीव सवै वर्षा के, जग में सर्प अपारा ।
सुन्दर मणि विरले में सोहै, सो विषधर है न्यारा ।। 2 ।।
ज्यों हस्ती सब एक वरण हैं, लाद मरे लद भारा ।
गज मुक्ता काहू सिर सोहै, सो कुंजर है न्यारा ।। 3 ।।
गांव शहर की भीर घनेरी, नाना लगत बजारा ।
रतन पारखी हैं कोई विरले, दुनियां बसत अपारा ।। 4
सवै लसकरी अस्त्र बांधे, समरथ रूप अपारा ।
आनि परे कोई विरला ठहरे, जिन धड़ सीस उतारा ।। 5
वाना बांधे मरम महरमी, कोई विवेकी जन प्यारा ।
सुख रनजीत सदा सतसंगी, दास मकुन्द विचारा ।। 6
साधो भाई भेष में भेद है न्यारा, कोई जानेगा जान ।
जा घर गुरु की भक्ति नहीं, संत नहीं मेहमान ।
ता घर डेरा जम दिया, जीवत भये मसान ।

परदेशी भाई हो

परदेशी भाई हो घर की सुधि विसरी ।। टेक ।।
गर्भ मांस ज्वाला के भीतर, रक्षा करत हरी ।
कौल करार कियो कर्ता से, सुन्दर देह धरी ।। 1 ।।
परो भुलानो भवसागर मां, मोह के कूप परी ।
दो फिरस्ते रहत संग में, देख चले नगरी ।। 2 ।। परदेशी
परी ममाषी यम राजा की, जोरि करी गठरी ।
कहा तुम लैहो कहा तुम देहो, रोवोगे नैन भरी ।। 3 ।।
मात पिता भाई सव जुरि है, कौन करे खबरी ।
कहत मकुन्द मूर्ख कब चेते, गली परी सकरी ।। 4 ।।

अब निजनाम भजो रे

अब निज नाम भजो रे भाई ।। टेक ।।
परम धाम को सुख सनातन, सहजई में मिलि जाई ।। 1
निसदिन चरण शरण चितलावो, तजो कुटिल कुटलाई ।
छाड़ि विकार मिलो प्यारे को, रहत नहीं दुचिताई ।। 2 ।।
नाम महातम संत पुकारे, सुक सनकादिक गाई ।
कोट यज्ञ तीरथ व्रत पूजा, एक नाम सें तुलें न भाई ।। 3
सत चित आनंद रूप निहारो, पल पल प्रेम बढ़ाई ।
करहु विहार देव ब्रह्मपुर में, आवागमन नसाई ।। 4 ।।
काल न कर्म लोक नहिं माया, ब्रह्म अनन्द सुहाई ।
अमर दास कहै निज नामी, सतगुर रीति लखाई ।। 5

बिना कुंजी खुले

बिना कुंजी का खुलै नहीं ताला ।। टेक ।।
काहे की कुन्जी काहे का ताला, काहे लगे किवारा ।। 1
तन की कुन्जी सुरति का ताला, प्रेम के लगे हैं किवारा ।। 2
छत्रसाल भजो नाम धनी का, धनी के चरन चित लागा ।। 3

सदा आनन्द मंगल में

सदा आनंद मंगल में रहिये ।। टेक ।।
इश्क सुराही प्रेम का प्याला, दिल अंदर रूहें छकि रहिये ।
तन सोवे रूहें निसदिन जागे, रैन दिवस पिउ पिउ कहिये ।
आठ पहर धनी चौंसट घड़ियां, धाम धनी सो लौ लइये ।
महा पसाद और चरणोंदक, यह सुख साथम में पइये ।
छत्रसाल भजु नाम धनी को, और देवन सों क्या चहिये ।

सुअना बोलत है निजनाम

सुअना बोलत है निज नाम ।। टेक ।।
आवत जात विलम ना लागै, भेजत आठों याम ।
लाखन कोस पलक में जावै, काहू न करत मुकाम ।। 1
हाथ पांव मुख पीठ पेट नहिं, लाल सेत न श्याम ।
पंखन बिना उड़ो निस वासर, शीत न लागै घाम ।। 2 ।।
वेद कहै सरगुन के आगूं, निर्गुण है विश्राम ।
निरगुन सरगुन तजो सुहागिल, जाय बसौ परम धाम ।। 3 ।।
लाल गुलाल बाग महल में, पक्षी करै मुकाम ।
दुख सुख कहां कछू ना व्यापै, दर्शन श्याम श्याम ।। 4
नूरयी ओढ़न नूरयीदासन, नूरयी के सब काम ।
बालक सखी नूर सतगुरु है, नूर ही धाम तमाम ।। 5 ।।

जोबन गर्व न कीजिए

जोबन गर्व न कीजिये, जग जीवन थोरा ।। टेक ।।
पानी कैसो बुल बुला, बहु उठत घनेरा ।
बिन सत बार न लागही, यहु तन जैसे ओरा ।। 1 ।।
यह संसार सराय है, यामें लिया है बसेरा ।
भोर होत उठि रमि चले, सूना कर डेरा ।। 2 ।।
जैसे माखी मधु चुने, क्रम कृमि धन जोरा ।
आय बधिक जब लय चलै, रज दय दृग फोरा ।। 3 ।।
काल कमान लीने फिरे, जग करत अहेरा ।
सुर नर मुनि कोइ ना बचे, तासें चेत सबेरा ।। 4 ।।
माल मता सुख सम्पदा, हाथी और घोड़ा ।
हुकम हुकूमत हाकिमी, जग रहा न तेरा ।। 5 ।।
जान माल सब पीव को, यामें कुछ नाहीं मेरा ।
कहत मकुन्द मति मन्द है, यामें नाहिं निहोरा ।। 6 ।।

नाम सुमिर जग बावरे

नाम सुमिर नर बावरे, कैसा फिरत भुलाना ।। टेक ।।
कंचन कोटि पहार दे, हय हाथी के दाना ।
कोट गऊ नित दान दे, नहिं नाम समाना हो ।। 1 ।।
सुख सम्पति और साहिबी, पद इन्द्र समाना ।
एक बार हो जांयगे, घर बार बिराना हो ।। 2 ।।
पढ़ पढ़ वेद बूढ़े भये, पढ़ि जन्म सिराना हो ।
हाथ झारि खाली चले, बिन नाम खजाना हो ।। 3 ।।
जस सेमर का सुआ, लाली देख लुभाना ।
मारी चोंच घुआ उड़े, पाछे पछिताना हो ।। 4 ।।
जस गूलर को भुनगा, कौनी राह समाना हो ।
दास मकुन्द गाढ़ि रमि रहे, उवरे असमाना हो ।। 5 ।।

निजनाम सुमर जग लड़ने दे

निज नाम सुमर जग लड़ने दे ।। टेक ।।
यह संसार मोह का सागर,
डूबि मरे ताय मरने दे ।। 1 ।।
यह संसार वारि का झाखर,
उरझ मरे ताय मरने दे ।। 2
भैंरों भूत शीतला देवी,
जोरि पूजै ताय पुजन दे ।। 3 ।।
हाथी अपनी चाल चलत है,
कुकर भूकै ताय भुकने दे ।। 4
कहत मकुन्द सुनो भाई साधो,
धनी की भक्ति हमें करने दे ।।

सखी चल देखिए निजधाम

सखी चल देखिये निज धाम ।।
चंद सूरज तारागन नाहीं, नहीं माया को काम ।
कोटि चन्द्रमा कोटि भान, कोटि किरन लजमान ।। 1
परदा खोलो प्रेम की जापर करो मुकाम ।
तारतंम सें तिमिर भगायो, उड़ गई नींद हराम ।। 2
रसिक पिया के प्रेम से भूल गई सब वाम ।
चौपर डारी प्रेमकी, मिले पिया निज धाम ।। 3
प्रेम पिया की सेज पै बाढ़ै प्रेम आनंद ।
दास मकुंद प्रेम हित भारी, पहुंच गई परमधाम ।। 4

सखी तुम भूल गई निजनाम

सखी तुम भूल गई निज नाम ।। टेक ।।
हो तो रूह अरस निज घर की, उतरी खलक जहान ।। 1
सुरति समार मूल चल देखो, अक्षर पार मुकाम ।
लै परमान खास पिया आये, वांच सुनाये इमाम ।। 2 ।।
तारतम्य धुनि मुरली बजाई, चौंक उठीं सुन वाम ।
नींद उड़ी जाग्रत भई आतम, देखो धाम तमाम ।। 3 ।।
चांदनी चौक बाग अति सुन्दर, लेत सदा विश्राम ।
मकुन्द सखी सरदार कहत है, भेंटे श्यामा श्याम ।। 4 ।।

अब मन बस रहो धाम

अब मन बस रहो धाम द्वारें ।
लाली लाली देहरी हरी हरी बाजू, दर्पण रग किवारें ।
मिहराव लाल दरखत सुवा मैना करत चोपदारें ।। 1 ।।
इच्छा की पालकी चढ़ आये, अक्षर करत दीदारें ।
सात घाट मानिक पुखराजें, जो सुख लेव पिया प्यारें ।। 2
निरमल नीरं वहत जमुना के, रतनन जड़ित किनारें ।
झाया सेत सुपेत असमानी पटका पीत उजारें ।। 3 ।।
कानन कुंडल अति छब सोहै, अकुड़ी कलगी बलहारें ।
प्राणनाथ सतगुर की महिमा कहत निमाज पुकारें ।। 4 ।।

शरदपूर्णिमा पर गायी जाने वाली गरबा

के. विंद्रवन पधारो रे....गरबा

(श्री बंगला जी से रास मण्डल में सवारी आने पर गायी जाती हैं)
कें विंद्रावन पधारो रे गिरधारी, कें विंद्रावन पधारो रे वनमाली ।
हवे अमनें बुलावन हारी ।। कें विंद्रावन ।। टेक ।। 1 ।।
गौये ग्वाल कल्यान पाठवाकें, आपुन रह्यो प्रनधारी ।। कें ।। 2
प्रफुलित देख लता द्रुंम बेली, वोतो चाहत अमनें नबेली ।
हमरे जोग आश्रत हौय वह, माया जोग्य प्रचारी ।। कें ।। 3
ब्रह्मानंद रस बेनबाई प्रभु, वो तो आकर्षन चितधारी ।।
सुनत श्रवन धुंन वेन नादकी, मांत तात लगे भारी ।। कै ।। 4
देह गेह सब नेह त्याग कें, अमें मिले जहां गिरधारी ।।
गौपद बछ उलंघ इंड यह, देह छोड संचारी ।। कै ।। 5
उतर कदंम जो कठोर कुटिल तुम, जहां ठाडी है राधा प्यारी ।।

चलो चलिए आज... गरबा

(रास मण्डल से सवारी श्री बंलाजी के अंदर जाने पर)
चलो चलिए सखियो आज, मोहन वेंन बाजी ।
वो तो हमें बुलावन काज, नौतन धुन गाजी ।। टेक ।।
जो जैसें तैसें हो निकसीं तामसियां वे नार रे ।
कछुइक ढील राजसिन कीनों वे भी उतरीं पार ।। नौतन ...
ग्वालन आन स्वांतसी रोंकी, करन सिनगार जो लागी रे
जान देओ दोषी हो हमको, मन मोहन हितकारी ।। नौ...
प्रान गये आगे पिऊ पासें, अब का पापी रोको रे
या लेवो देह गेह सब तनकी, अव का हमकों टोको ।। नौ.
तामसी राजसी स्वांत सुरतां, जोग माया मिल भेंटी रे
नवल सिनगार सजे अरजुन सिंध, त्रगुन ताप तेई मेंटी ।। नौ.

मारे आनंद उछव....गरबा

मारे आनंद उछव आज, राज घेर आव्यां छे ।
श्री स्यामा जी सखियन संग, तेडीने पधारयां छे ।। 1 ।। राज.
मे तो कीधो छे आरती अखण्ड, मोतीडे वधाव्या छे ।।
भांत भांतना भोजन कीधां जीरे,
वाले लीधां ने नवराव्या ।। 2 ।। राज.
श्री जमुना जल अचवन कीधां जीरे, सहूसाथने कराव्यां ।
बीडी जुगल दोऊ मुखमां लीधां जी रे,
सहू साथने बेंची आली ।। 3 ।। राज...
श्री प्राणनाथ बर बचिख्यिण पांम्या जी रे ।।
मारा लिख्या करमना काधां ।।
एहेल सखी ना पीऊ परसोत्तम जी रे,
मारी छैल छबीली राधा ।। 4 ।। राज...

तुम देखो सखी..... गरबा

तुम देखो सखी निहार, बेंठक अपनी कों ।
जिम दाडिंम कली विचार, बेंठक अपनी कों ।। टेक ।।
मूल मिलावा चोंसठ मंदिर, सनमुख चारों द्वार रे ।
थंभन की इक हार छोड़ कें, आगे कों पग धार ।। 2 ।। बें...
देख चबूतरे गिलम विछी हैं, कठेड़ा जड़ित किनार रे ।
चोंसठ थंभ चंद्रवा ऊपर, झालर मोती लार ।। 3 ।। बें...
मध सिंधासन राज श्यामा जी, बेंठ करें सिनगार रे ।
हिरदें सखियां चरन पकड़ के, बेठी हरख अपार ।। 4 ।। क...
बांहें गहें गल डार के वेंठी, साडिंन की झकोर रे ।
सीस फूलन के ऊपर सोहे, हिरदें सोहें हार ।। 5 ।। बै..
येकें तकियन दाव के बेंठी, येक न येक आधार रे ।
सिंघासन लो भर कें बेंठी, साड़ी हैं सुखकार ।। 6 ।। बेंठ...

येक तन येक दिल येक बोली सब, मांग्या खेल कुफार रे ।
पिआ कहत मत जाओ खेल में, हू हो सवी खुआर ।। 7 ।। वें...
में आंहों उत सतगुर वन कें, तुम नहीं लखों लगार रे ।
इलम कहों या घर की वातें, चीन्हों सो सिरदार ।। 8 ।। वें...
श्री जी आये भेख बदल कें, सवदंन करत पुकार रे ।
वेद कतेब कहे ब्रह्म आंहें, ब्रह्मसृष्ट मंझार ।। 9 ।। बेंठक...
सब साहे दीयें अपने काजें, परखो निज भरतार रे ।
इत हो प्रेम पिया सों करिए, रहें ना कछु खुंभार ।। 10 ।। वें...
वचन पिआ के हों हिरदें, चलिए अछिर पार रे ।
अंदर खिलवत मूल मिलावा, देखो नेंन उघाड़ ।। 11 ।। वें...
इत हो हमकों खेल दिखाया, विलंम भै नहीं वार रे ।
सुपनें जांनों कै जुग वीते, अब मन मानी हार ।। 12 ।। वें...
श्री महामत के उत चरनों वेंठी, तिन कों चरन आधार रे ।
कृष्णदास पिया सेज विछा कें, अरस दिली वेंठार ।। 13 ।। वें...

श्री नन्द कुमार....गरबा

श्री नंद कुमार वृंदावन रहस रमाडियो ।
अनिहारे संग सुता वृषभांन की, रूहें बारे हजार,
रहस रमें नंदलाल सों, तता थेई थेईकार ।। 1 ।। बृंदावन...
अनिहारे बाजे बजें बहु भांत के, बहें त्रविध समीर ।
जमुना जी की रेत को, छब जुरतनां हीर ।। 2 ।। बृंदावन...
सकल कला नो चंद्रमां, फूली दुम वेल ।
पसू पंखी आनंद सों, करें नये-नये खेल ।। 3 ।। बृंदावन...
विच विच गोपी स्यामरो, गलें बांहोडी डाल ।
लीला रमें निजधाम की, भयो जै जैकार ।। 4 ।। बृंदावन...

बिच बिच मुरली बाजती, बिच बिच करताल ।
सब्द उठें बहु भांत के, धरुनी धमकार ।। 5 ।। बृंदावन...
कला करें बहु भांत के, कोई बनती मोर ।
बांदर बन कोई ठेकतीं, हिये प्रेम हिलोर ।। 6 ।। बृंदा...
घूमें घुमडले रंग सो, कोई कुनियां खेल ।
फूंदडी फरे बहु भांत सों, करसों कर मेल ।। 7 ।। बृंदा...
कोई सखी आख मिचावनी, रमें प्रीतम संग ।
आंबाबन कोई सींचती, श्रम होत ना अंग ।। 8 ।। बृंदा...
स्वर अंगना सब देखती, मन करतीं बिचार ।
रजनां भये बृज भोम की, कलपें उरधार ।। 9 ।। बृंदा...
सुख सनाकादिक नारद, अज सेस महेस ।
बांछत रज बृजभोंम की, पावत नहीं लेस ।। 10 ।। बृंदा...
जुगल चरन की बांछना, मेरे उरमांहि ।
कब मिलिए कब जाइये, अपनो घर तांहि ।। 11 ।। बृंदा...

सखी एक समय .... गरबा

सखी एक समय श्री श्यामलिया वृन्दावन में ।।
उत बाजत वैन रसाल, हो वृन्द्रावन में ।। सखी...
पहले निकली तामसिया वृन्द्रावन में ।।
जिन छोड़ दिये घर द्वार हो वृन्द्रावन में ।। सखी...
दूजे निकसी राजसिया वृन्द्रावन में ।।
जिन छोड़ दियो श्रृंगार हो वृन्द्रावन में ।। सखी...
तीजे निकसी स्वाससतिया वृन्द्रावन में ।।
तिन छोड़ दियो अधार हो वृन्द्रावन में ।। सखी...
श्याम ने उथले वचन कहे वृन्द्रावन में ।।
तुम क्यों छोड़े घर द्वार, हो वृन्द्रावन में ।। सखी...

परषोत्तम प्रगट्या... गरबा

परसोत्तम प्रगटया रे पस्चिम देसमां,
नवां नगरमां प्रगटया नन्दकुमार जो ।
करुणा तो कीधो रे केसवराय नें,
जेनो संकर सेष न पामें पार जो ।। 1 ।।
सांभल ने सजनी रे जुगती जन्मनी,
ब्रह्म सरीखों भारी कोई अवतार जो ।
देव मलीने वृष्टि कीधी फूलनी,
मुखंडूं जोतां आनन्दियो नर नार जो ।। 2 ।।
पहोर दिवस चढ़तारे पीउजी प्रगट थया,
संवत सोला पचोतरेनी साल जो ।
भादरवो महीनों रे कृष्ण पक्षमां,
चतुरदसी ने जोग हतो रविवार जो ।। 3 ।।
पत्रिका लाव्या रे जोशी जन्मनी,
ब्रह्म सरीखो भारी कोई अवतार जो ।
कारज तो करसे रे झाझा जीवना,
लाल सखी कहे ब्रह्मसृष्टिना प्रतपाल जो ।। 4 ।।

गागर उतारो रे... गरबा

गागर उतारो रे वनवारी । कांई मुझे लगे छे भारी रे ।। टेक ।।
गोरे वदन तन साड़ी सोहे । चितवन की छवि न्यारी रे ।। 1
चितवन तै मेरों मन मोह्यो । अबै हो दिनन की बारी रे ।। 2
गोरस तेरो मन हर लीनो । तैं जोवन मतवारी रे ।। 3
ज्ञान दास हँसि कर गहि प्यारी । पीजे हो कृष्ण मुरारी रे ।। 4

ठाढ़ी रहे न अहीर... गरबा

(श्री राजजी की सवारी रास मण्डल से श्री बंगला जी जाते समय यह दानलीला गायी जाती है)

ठाढ़ी रहे ना अहीर की, तू देजा मेरो दान ।। टेक ।।
कैसो दान कहावत ढोटा, कोंने तुम्हारो लीन्हों ।
सदाए मारग आवत जावत, कबहूँ न काहू दीन्हों ।। 1 ।।
दान हमारो हमहीं लेहें, लिये बिना नहीं जेहों ।
सबरे ग्वालन दधी खवाऊं सब दिन बैठी रेहों ।। 2 ।।
कैइयो बेर गई तुम लें लें, चोरी हमारो दान ।
अबके लेहों बेर-बेर के, मोहे नन्द की आन ।। 3 ।।
बात कहो अपने लायक की, जामें कछू बनि आवे ।
सुन पाहें कहूँ कंसराये जो, तो सब धर पकड़ मंगावे ।। 4 ।।
जाके गर्व फिरत गर्रानी, ता घर जाए पुकारो ।
हम दधी लेहें माखन खेहें, तब मारग पग धारो ।। 5 ।।
हमरे तो तुमहीं मनमोहन, गांव तुम्हारे बसिये ।
कहे सुने को बिलग न मानो, ना ते माफक हंसिए ।। 6 ।।
नातो रसो बसो हियरा में, हम तुमसे नहीं न्यारे ।
वचन तुम्हारे ऐसे लागे, प्राननहूं ते प्यारे ।। 7 ।।
दूध दधी चाहो सो लीजे, तुमरे काजें ल्याई ।
प्रगटे पूरन भाग हमारे, दरस तुम्हारे पाए ।। 8 ।।
बढ़ी प्रीत रस रीत परस पर, दोऊ ओर सुख छायो ।
'छत्रसाल' को दियो कृपा कर, भक्त पदारथ पाए ।। 9 ।।

चलो सखी कर... ठुमरी

चलो सखी कर आईए परना के दर्शन ।। टेक ।।
परना में श्री राज विराजे-2,
सेवा होत अष्ट पोहोरियां ।। चलो सखी...
आस पास ग्रह धाम बन्यों है-2
चितवन होत रहत सब बिरियां ।। चलो सखी...
जिकर इलम की होत रात दिन-2,
सुनत मोक्ष फल पाई सखियाँ ।। चलो सखी...
पदमावती श्रीजी की बैठक-2,
वरनन होत अरस विस्तरियां ।। चलो सखी...
वल-वल जाऊँ मैं चरण शरण की-2
छत्रसाल निज देखो नजरियां ।। चलो सखी...
सुन्दरसाथ निज देखो नजरियां ।
चलो सखी कर आईए परना के दर्शन ।

सत्य धर्म के... ख्याल

सत्य धर्म के पालन करता, प्राणनाथ प्रभु आये ।। टेक ।।
प्राचीन प्रणामी मत को, कलि में आन लखाये ।। 1 ।।
सत युग में नारद से ब्रह्मा, पर परनाम बताये ।
ताहि नाम को चार वेद में, नेति-नेति कर गाये ।। 2 ।।
रामचन्द्र त्रेता में प्रगटे, गुरु वशिष्ट कंह आये ।
हाथ जोड़ कर सिर नाये, कर परनाम सुख पाये ।। 3 ।।
द्वापर अंत आदि कलयुग के, कृष्ण परनाम कहाये ।
पराशर ऋषि आदि सबों ने, ग्रंथन बीच बताये ।। 4 ।।
शास्त्र भागवत देख आँख से, जो चाहे भरम मिटाये ।
परनामी का आदि अन्त नहिं, जन गोपाल जस गाये ।। 5 ।।

सुंन जाग सखी... नारदी

(पृथ्वी परिक्रमा पर चौपड़ा मंदिर में गाई जाती है)

सुंन जाग सखी री, जागनी आई ।। टेक ।। 1 ।।
सुनत तारतम चोंक परी, सतगुरु आंन जगाई ।
जाग परी सुपनों जग जानों, प्रीतम की सुध पाई ।। सुन ।। 2
गोकल रास विलास जागनी, लीला त्रिविध दिखाई ।
निजधाम तें आई सखी सुपने में, अपने संगे कंथ खिलाई ।। 3
बीतक विरत बिचार हो अपनी, जान जुगल सुखदाई ।
करिये रसरीत निरंतर हो, जो ए प्रीतम के मन भाई ।। सुं... 4
छोड़ो मान गुमान ग्यान को, त्यागो लोक बड़ाई ।
निजधाम की रीत गहो द्रढ़ के, जग त्याग सबे चतुराई ।। सुं..5
वहा तेरो नाम तेरी सेवा, कहा बैठी हो अंग लगाई ।
यह बूझ विचार हिए मनमें, उर अंतर प्रीत लगाई ।। सुं... 6
महाकारन तोहे प्रीतम दीनो, अब कहा रह्यो लुभाई ।
मकुंद मनोरथ पूरन करके, सखियाँ भेटो अंग लगाई ।। सुं...7

पुण्य पावन धनी... भजन

पुन्य पावन धनी श्री राज, धाम तेरा प्यारा लगे ।। टेक ।।
प्राण प्यारे प्राण सिरताज, धाम तेरा प्यारा लगे ।
महिमा लिए स्वामी परना में आये, जीवन में मुक्ति की युक्ति बताये,
होऽ ओऽऽ.....तेरी वाणी पे सबको है नाज ।। धाम तेरा...
विष जल को अमृत करके दिखाया, पद्मापुरी को पावन बनाया,
होऽ ओऽऽ.....किलकिला ये खिलखिला वहो आज ।। धाम तेरा...
माया के चक्कर में पड़ गई भवंरिया, 'सुन्दरसाथ' की निराली नगरिया,
होऽ ओऽऽ..... बंगला जी में गूंजी आवाज ।। धाम तेरा...

परना जी में राज... भजन

परना जी में राज आये, हो परना जी में श्री राज आये,
श्री श्यामा जू संग सुहाये, हो परना ....
पहली वेर वृज में आये, गोपी ग्वाल नचाये हो । परना.....
दूसरी वेर रास में आये, मुरली नाद सुनाये हो ।। परना.....
तीसरी वेर बरारब आये, हक के हुकम चलाये हो । परना.....
चौथी वेर नवतनपुरी आये, तारतम मंत्र सुनाये हो । परना.....
पाँचमी वेर पद्मावती आये, जागनी रास खिलाये हो । परना.....
छत्रसाल नागर बलीहारी, मोतिन चौक पुराये हो । परना.....

परना की रज लगे.... भजन

परना की रज लगे प्यारी जहाँ आये श्री राज ।
धन्य-धन्य बिन्ध्याचल है, तापर झण्डा विराज ।
धन्य-धन्य तहाँ के वासी, धन तिनके काज ।
विष की नदी पय कीन्ही, कियो हीरा को साज ।
धन्य-धन्य जागनी रास खेले आप महाराज ।
ज्ञान दास कहे कर जोरी, करो पार जहाज । परना की..

तेरो अवसर... भजन

तेरो अवसर बीतो जाय, धनी के भजन बिना-2
मानुस तन दुरलभ है प्यारे, वृथा काहे गंवाये । धनी के भजन...
माया के चक्कर में फंसकर, धनी का नाम भुलाये । धनी के...
यह तन है कागज की पुड़िया, बूँद पड़े गल जाये । धनी के भजन...
बाँधी मुट्ठी आये जगत में, हाथ पसारे जाय । धनी के भजन...
कहत मकुन्द सुनों भाई साधो, अन्त समय पछताये । धनी के...

अब रट धामधनी... भजन

अब रट धाम धनी जी सों लागी-2
अरस साहेबी नजर न आवे, बिन जाने हम माँगी, हो अब रट...
आन पड़ी हूँ त्रिगुन फाँस में, माया दोजक लागी, हो अब रट...
भूली फिरत राह नहीं पावत, भटकत फिरत अभागी, हो अब रट...
हम तो चरण ग्रहे सतगुरु के, तारतम सुनके जागी, हो अब रट...
तारतम वाणी तलवार धार है, तासे दुनिया भागी, हो अब रट...
जाको होय अंकूर मूल को, सोई परम सुहागी, हो अब रट...
दूजा और देव न पूजे, परनामी वैरागी, हो अब रट...
जमुनादास चरण रज तिनकी, जिनकी यह मति जागी, हो अब रट...

मन तुम चलियो... भजन

मन तुम चलियो निज दरबारा ।। टेक ।।
पाँच तत्व बैकुण्ठ सुंनतें, गुन निर्गुन से न्यारा ।। 1 ।।
ॐकार और काल निरंजन, ज्योति निराकार के पारा ।
अव्याकृत सबलिक केवल, अक्षर हूँ से न्यारा ।। 2 ।।
परमधाम दस खंड विराजे, शोभा रतन पहारा । मन...
सात घाट यमुना जी दोऊ पुल, आगे नूर द्वारा ।। 3 ।।
चाँदनी चौक में हरे लाल दरखत, शोभा अपरम्पारा ।। मन...
सौ पीढ़ियाँ चढ़ि ऊपर जैये, अठाईस थम्भ अपारा ।। 4 ।।
चारो हार हवेली होइके, चौसठ थम्भ निहारा ।। मन...
तले गिलम ऊपर चन्द्रवा, सोहे चारउ द्वारा ।। 5 ।।
कंचन रंग जड़ित सिंहासन, तापर युगल बिहारा ।। मन...
चारों खाँच में लाल जो तकिया, बैठत बारे हजारा ।। 6 ।।
झलहल जोति करे रे सिंहासन, शोभा बहुत अपारा ।। मन...
अमर सखी सेवा में हाजिर, पावे नित दीदारा ।। मन...

जपो रे मन... भजन

जपो रे मन पल-पल श्री निजनाम
है निजनाम उधारन कारन, आधि व्याधि उपाधि निवारन,
करत पूरन मन काम । जपो रे मन...
मंत्र तारतम मुक्ति दिलावें, जन्म मरन के दुःख मिटावे,
पहुँचावे निज धाम । जपो रे मन...
पाप हरे कलियुग को मारे, अभय करे भवजल से तारे,
अविचल दे आराम । जपो रे मन...
सिर पर काल खड़ा है गाफिल, काहे रहे सुमरिन में बुजदिल,
लागत नहीं कछू दाम । जपो रे मन...

ओ परमधाम के... भजन

ओ परमधाम के साथी, भजन कर लो राज का ।
भजन कर लो राज का, भजन श्यामा-श्याम का,
भजन श्यामा श्याम का भजन धनी धाम का ।
ओ परमधाम के साथी, भजन कर लो राज का...
राज नाम है शब्द सुहाना, राज नाम सुख लेना ।
राज नाम से काम बनेगा-2, राज नाम सुख देना । भजन...
भाई बन्धु कुटुम्ब कबीला, ये मतलब की सेना,
अन्त समय कोई काम न आवे-2, रोय भरेंगे नैना । भजन...
परमधाम के साथी, भजन कर लो राज का
कहे बाबा जी सुन प्रिय बन्धु, भजन करो दिन रैना,
या देही को कौन भरोसा-2, आज रहे कल रहे ना । भजन...

स्वामी तेरा नाम... भजन

स्वामी तेरा नाम मुक्ति देने वाला है,
सबका दुःख हरने वाला है, स्वामी तेरा...
श्री प्राणनाथ प्यारे तेरा नाम प्यारा है,
सहारा सिन्धु का, रटते हैं जो नाम तेरा
पा जाते हैं वो सहारा सिन्धु का...
लो मेरा प्रणाम, लो मेरा प्रणाम नैया तू ही खेने वाला है,
सब का दुःख हरने वाला है, स्वामी...
झूठ है यह माया काया, स्वास काया का
भरोसा कौन है, बोल रहा पिंजरे का पंछी
जब तक जीवन है, अन्त में मौन है...
कहता है अरुण धनी का, घट-घट के वासा है ।
सबका दुःख हरने वाला है, स्वामी...

जीवन में अमृत रस... भजन

जीवन में अमृत रस घोल,
श्री राज श्यामा राज श्यामा राज श्यामा बोल ।
राज नाम की जपले माला-2, ये पल फिर नहीं आने वाला,
मानव जनम बड़ा अनमोल । श्री राज श्यामा...
जाग बावरे अब तू जाग, लोभ ईर्षा मन से त्याग,
जाये वक्त अब अखियाँ खोल । श्री राज श्यामा...
क्या पाया क्या खोया तूने, क्या काटा क्या बोया तूने,
अपने किये कार्मों को टटोल । श्री राज श्यामा...

प्रेमी मस्ताने मत... भजन

प्रेमी मस्ताने मतवाले पिये जा, पिये जा,
पीने वाले जाम उठा ले,
पिये जा-पिये जा ।।
जिसने प्रेम का प्याला पिया,
चाहे कुछ साधन न किया,
उनको मालिक आप बचावे,
पिये जा-पिये जा ।
जिनको आया इश्क हकीकी,
उसको दुनिया लगती फीकी,
रहते फिरते होस निराले,
पिये जा-पिये जा ।
तुमको अगर कहे कोई स्याना,
चाहे कोई कहे दिवाना,
पीछे अपना दिल बहलाले,
पिये जा-पिये जा ।
सतगुरु खुद हैं जिनके साकी,
उनके लिये रहा क्या बाकी,
अगर लिखा है तेरे ताले,
पिये जा-पिये जा ।
तेरे आगे जाम पड़ा है,
गाफिल क्यो बेहोस खड़ा है
इश्क हकीकी भर-भर प्याले,
पिये जा-पिये जा ।
प्रेमी मस्ताने मतवाले, पिये जा, पिये जा ।।

मेरा पंथ है प्रणामी

मेरा पंथ है प्रणामी, हम कहलाते निजनामी,
हरदम प्राणनाथ संदेश की, सुन लो मेरी जुबानी ।। टेक ।।
निकल पड़े प्रभु संदेश लेकर, जग को आज सुनाने...2
भूले भटके गिरे हुए को, अपने गले लगाने-2
हम हैं उनके सहलाने, लम्बा चन्दन मेरी निशानी । हरदम...
माया मोह क्रोध को छोड़ो, करम करो तुम अपना-2
नश्वर देह जगत है नश्वर, देख रहे सपना-2
ये जीवन एक कहानी, सुनो बुद्धि हो मानी । हरदम...
प्रेमलक्षणा भक्ति पर, अपना कदम बढ़ाना-2
अक्षर पार ब्रह्म है मेरा, उन्हीं का ध्यान लगाना-2
सीखो सत्य पर कुर्बानी, सीखो धनी जी की वाणी । हरदम...

सच्ची वाणी अखंड वाणी

सच्ची वाणी अखंड वाणी, कौन पढ़ेगा, हम सारे....
मुक्ति देने वाली वाणी, कौन पढ़ेगा, हम सारे....
सुन्दर सुन्दर शब्द सजाए, सुन्दर रचना कीनी है ।
सुन्दरसाथ पे कृपा अपनी, धामधनी ने कीनी है ।
इसको चित्त में कौन धरेगा, हम सारे । सच्ची वाणी.....
जिस वाणी से आतम जागे, अपनी खातिर आई है ।
चौदह लोक को मुक्ति देने, श्रीजी ने फुरमाई है ।
इसे जाग के कौन सुनेगा, हम सारे । सच्ची वाणी.....
वाणी पढ़ने सुनने वाला, दुख ना कभी उठाता है ।
शरण में लेते धामधनी वो, परमधाम को जाता है ।
इस पर प्रेम से कौन चलेगा, हम सारे । सच्ची वाणी.....

पढ़ने से जिसका हो

पढ़ने से जिसका हो बेड़ा पार,
सुनने से आए सुन्दर विचार ।
बड़ा सुख देती है, मेरे सतगुरु की वाणी ।।
ध्यान से पढ़े पट अन्दर का है खोल देती,
प्रेम से सुने जो निजधाम में पहुँचा देती ।
हमारी है, हमारे लिए, हुई मेहरबानी है ।। मेरे सतगुरु...
फुरमाई मेरे सतगुरु, मुक्ति दिलाने आई ।
समझो तो, साचो तो, यह अपनी कहानी है ।
मेरे सतगुरु की वाणी ।

दर्शन दो घनश्याम

दर्शन दो घनश्याम नाथ मोरे, अँखियाँ प्यासी रे....
मन मंदिर में ज्योति जगाओ, घट घट वासी रे.....
दर्शन दो ..
द्वार दया का जब तू खोले,
पंचम स्वर में गूँगा बोले ।
अंधा देखे, लंगड़ा चलकर पहुँचे काशी रे । दर्शन दो ..
मंदिर मंदिर मूरत तेरी, फिर भी न देखी सूरत तेरी ।
युग युग बीते न आई मिलन की, पूरनमासी रे । दर्शन दो ..
पानी पीकर प्यास बुझाऊँ, नैनन को कैसे समझाऊँ ।
आँख मिचोली छोड़ो अब तो, ब्रज के वासी रे । दर्शन दो ..
बल निर्बल के धन निर्धन के,
तुम रखवारे भक्त जनन के ।
तुम्हारी दया से सब सुख पाऊँ, मित्र उदासी रे ।
दर्शन दो घनश्याम .....

जिसने भी राधे श्याम को

जिसने भी राधे श्याम को, दिल में बसा लिया ।
खोए हुए नसीब को, उसने जगा लिया ।।
जिसने भी .....
मीरा की लगन श्याम के, चरणों में लगी थी ।
अमृत बना के जहर का, प्याला पिला दिया ।।
जिसने भी .....
नरसी ने बड़ी मस्ती से, गाया था झूमकर ।
उसने भी प्रेम प्यार से, प्रीतम रिझा लिया ।।
जिसने भी .....
सुनके पुकार आ गए, द्रौपदी की लाज को ।
द्रौपदी की आहो जार ने, मोहन बुला लिया ।।
जिसने भी .....
केवल खुद को छोड़कर, जो आया शरण में ।
उसने श्याम सुन्दर को, अपना बना लिया ।।
जिसने भी .....

प्रणाम
प्रणाम
प्रणाम

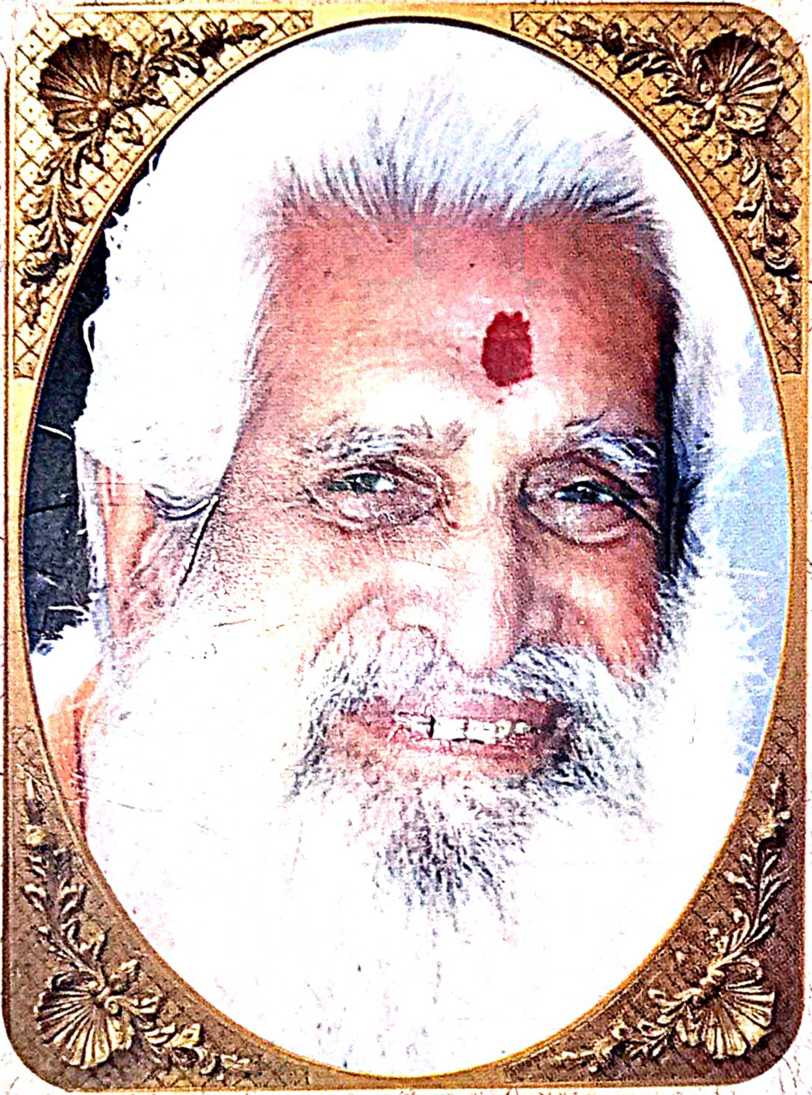

ब्रह्मलीन पूज्यपाद

श्री धामीबाबाजी महाराज

(10 अप्रैल 1921-10 अप्रैल 2010)